जय क्षात्र धर्म ओ३म् वीर भोग्या वसुंधरा

महाराणा प्रताप स्मृति भवन समिति, सैक्टर- 8, करनाल
(राजपूत महासभा करनाल, हरियाणा)

धर्म परायणा क्षत्राणी माताओं एवं वीरांगना क्षत्राणियों की चित्रावली।

क्षत्रियों को 14वीं सदी में क्षत्रिय के साथ-साथ राजपूत कहना भी प्रारंभ हुआ जो धीरे-धीरे बढ़ता हुआ अब बड़े पैमाने पर क्षत्रियों को राजपूत कहा जाने लगा है। मूलरूप से तो राजपूतजन क्षत्रिय लोग ही हैं। ये क्षत्राणी पूर्वजा वीरांगनायें चारों वर्णों के लिए समान रूप से आदर्श एवं माननीया हैं।

रानी हासल देवी

विश्व विख्यात सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय की छठी पीढ़ी में जन्मे सुप्रसिद्ध क्षत्रिय नरेश महाराजा हम्मीर देव चौहान की रानी थी हासल देवी। दो बार हार का मजा चखने के बाद अलाउद्दीन खिलजी ने धोखे से रणथंभौर दुर्ग पर अधिकार कर लिया तो कई हजार क्षत्राणी नारियों के साथ 10 जुलाई 1301 ई0 में रानी हासल देवी ने जौहर की लपटों में पवित्रता युक्त प्राणोत्सर्ग किया।

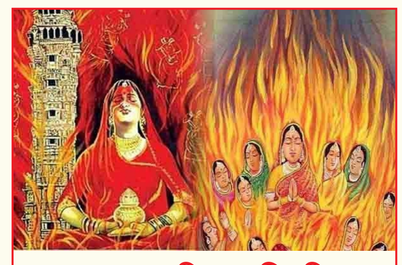

महारानी पद्मिनी

महारानी पद्मिनी जैसलमेर नरेश राजा पुण्यपाल भाटी की पुत्री थी और राजस्थान की सिंहलवाड़ा जागीर के ठाकुर हमीर सिंह देवड़ा चौहान की भानजी थी। रानी पद्मिनी का विवाह चित्तौड़ के शासक रावल रत्नसिंह के साथ हुआ था। अलाउद्दीन खिलजी के साथ युद्ध मे रावल रतन सिंह के वीरगति को प्राप्त होने के बाद महारानी पद्मिनी ने दुर्ग में रक्षित कई हजार क्षत्राणी नारियों के साथ 26 अगस्त 1303 ई0 में सामूहिक जौहर कर लिया था।

सती अनुसूया

महामनस्विना सती अनुसूया अत्रि ऋषि की धर्मपत्नी थी। इनके बड़े पुत्र सोम थे। सोम के अपरनाम चंद्र से क्षत्रियों में चंद्रवंश चला था। सोम के पुत्र बुध का विवाह सूर्यवंशी मनु की पुत्री इला से हुआ था।

तारामती

तारामती शिवि नरेश की कन्या थी। सूर्यवंशी क्षत्रिय सत्यावादी महाराज हरिश्चन्द्र की रानी थीं। धर्म का पालन करने वाली और राजा का बढ़-चढ़कर सहयोग करने वाली बड़ी ही धर्मपरायणा नारी थीं।

माता सीता

मिथिला के सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा सीरध्वज जनक की योगिनी नाम की दूसरी रानी के गर्भ से सीता का जन्म हुआ था। यह बात असली रामायण के बालकाण्ड के 25वें सर्ग के आठवें श्लोक में लिखी हुई है, किंतु अधकचरे कथाकार बताते हैं कि धरती में गड़े एक घड़े से राजा जनक का हल टकराया उसमें से सीता निकली जबकि वह जनक की रानी योगिनी से उत्पन्न ज्येष्ठ पुत्री थीं। अयोध्या नरेश राजा दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र भगवान श्री राम से सीता का स्वयंवर हुआ। सीता ने पतिव्रत धर्म निभाने के लिए 14 वर्ष श्री राम के साथ वनवास किया।

सावित्री

मद्रदेश के राजा अश्वपति की एकमात्र कन्या सावित्री आयुर्वेद चिकित्सा की विशेषज्ञा थी। शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन के पुत्र सत्यवान की रानी बनी। यम के मुख में पहुंचे यानि मृत्यु के नजदीक पहुंचे रूग्ण पति को यम यानि मृत्यु के पाश से चिकित्सा करके छुड़ाया। एक महान नारी।

दमयंती

दिव्य बुद्धि दमयंती विदर्भ देश के राजा भीष्मक की पुत्री थी। वह निषध नरेश क्षत्रिय राजा नल की महारानी थी। राजा नल जब राज्य विहीन हो गए तो दमयंती ने उन्हें पुन: राज्य प्राप्त कराने में सफलता दिलाई।

गांधारी

गांधार के राजा सुउल की पुत्री, कुरू साम्राज्य के सबसे बड़े राजकुमार धृतराष्ट्र की महारानी, धर्मपरायणा, सदाचारी स्वभाव के लिए जानी जाती हैं। उन्होंने बड़ी कठोर प्रतिज्ञा की कि जब मेरे पतिदेव अंधे हैं कुछ देख नहीं सकते तो मैं भी अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर पति धर्म निभाती हूं।

कुन्ती

यदुवंशी क्षत्रिय शूरसेन श्री कृष्ण जी के दादा थे। उन्होनें अपनी पुत्री पृथा को अपनी बुआ के निसंतान पुत्र नागवंशी क्षत्रिय राजा कुंतीभोज को गोद दे दिया था। इस प्रकार पृथा का नाम कुंतीभोज की पुत्री बन जाने के कारण 'कुंती' कहा गया। कुंती कुरूवंश के राजकुमार पाण्डु की महारानी तथा युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता थी। ये भगवान श्रीकृष्ण की सगी बुआ थी। कुंती ने महाभारत के युद्ध से पहले क्षत्राणी वाणी में अपने पुत्रों को ललकारा था कि ''क्षत्राणी माताएं जिस दिन के लिए पुत्रों को जन्म देती हैं वह युद्ध का दिन चुका है।''

देवकी

देवकी द्वापर युग के अंतिम चरण में महाभारत के कुछ काल पहले जन्मी मथुरा के राजा उग्रसेन के भाई देवक की कन्या थी और कुशल नीतिवान भगवान श्री कृष्ण की माता थी। श्री कृष्ण ने जगत् विख्यात होकर अपनी माता को भी धन्य किया।

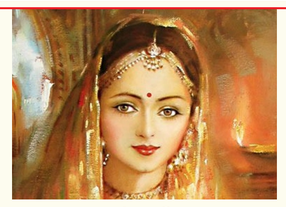

द्रोपदी

द्रोपदी पांचाल देश के क्षत्रिय राजा द्रुपद की पुत्री थी। स्वयंवर की शर्त अर्जुन ने जीती थी, किंतु द्रोपदी के विवाह के फेरे युधिष्ठिर से हुए। वह केवल युधिष्ठिर की रानी थी जो कि शुद्ध महाभारत ग्रंथ आदि पर्व अध्याय 197 श्लोक 11-12 में लिखा है। पांचाल देश की कन्या होने से उन्हें पांचाली कहा जाता था। सनातनी लोगों को नीचा दिखाने के लिए शरारतियों ने पांचाली शब्द को पांच भाइयों की पत्नी के रूप में लिखा दिया जोकि न तो इतिहास सम्मत है और न ही शास्त्र सम्मत है।

रूक्मिणी

रूक्मिणी भगवान कृष्ण की पत्नी थी। उन्होनें श्रीकृष्ण से प्रेम विवाह किया था। उनका जन्म यदुवंशी क्षत्रिय भीष्मक के यहां हुआ जो विदर्भ के शासक थे। श्रीकृष्ण जैसे वर को पाकर रूक्मिणी को भाग्य की लक्ष्मी कहा गया।

राजमाता बिदुला

सौवीर देश की राजमाता बिदुला बड़ी वीरांगना क्षत्राणी थी। आकमणकारी बड़े शत्रु को देखकर उनका पुत्र संजय रण क्षेत्र में भयभीत होकर महल में भाग आया। माता बिदुला ने उसे बुरी तरह धिक्कारा और कहा कि तूने मेरे दूध की लाज नहीं रखी। वापिस रणक्षेत्र में जा। बलिदान हो गया तो यश पाएगा और जीत गया तो यशस्वी हो ही जाएगा। माता की फटकार सुनकर कायर पुत्र वीरता की हुंकार भरते हुए रणक्षेत्र में जा डटा और शत्रु को मारकर यशस्वी बन गया। माता पुत्र को महान बना देती है।

शकुंतला

सूर्यवंशी राजा विश्वामित्र जो बाद में ईश्वर की भक्ति करके राजऋषि भी बने, की कन्या थी। चंद्रवंशी राजा दुष्यंत से इनका विवाह हुआ। इनका पुत्र भरत पराक्रमी हुआ जिसके नाम से आर्यावर्त देश को भारत भी कहा जाने लगा। भरत का देश भारत।

भक्त मती जीण माता

राजा राणा घंघराय चौहान ने चूरू (राजस्थान) के पास अपने नाम पर घांघू नामक नगर बसाकर अपना राज्य स्थापित किया। इनकी बड़ी रानी के पुत्र हर्ष और पुत्री जीण ने छोटी रानी के दुर्व्यवहार से तंग आकर वनों में जाकर तपस्या की और ईश्वर से अनेक सिद्धियां प्राप्त करके जनता के दु:ख हरे। 10वीं शताब्दी में बहन-भाई दोनों के नाम पर सीकर में अलग- अलग मंदिर बनाए गए, जहां आज भी जनता श्रद्धा पूर्वक उनके दर्शन को जाती है।

रानी इच्छन कुमारी

रानी इच्छन कुमारी आबू-चंद्रावती के क्षत्रिय नरेश जैत सिंह परमार की पुत्री और जगत विख्यात वीर क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान की रानी थी। रानी इच्छन कुमारी ने पृथ्वीराज चौहान के बंदी बनाए जाने के पश्चात मौहम्मद गोरी की सेना से युद्ध किया और वीरगति को प्राप्त हुई।

रानी रूद्रमा देवी

रानी रूद्रमा देवी, राज्यकाल 1259-1289 ई0। दक्षिण भारत में क्षत्रियों के काकतीय राजवंश के राजा गणपति देवा की पुत्री रूद्रमादेवी थी। रूद्रमा देवी ने 1261-62 ई0 से सह-राजकुमारी के रूप में अपने पिता गणपतिदेव के साथ संयुक्त रूप से काकतीय साम्राज्य का शासन शुरू किया था। उन्होनें 1263 ई0 में शासन की पूर्ण संप्रभुता ग्रहण की। वे क्षत्रिय काकतीय वंश की महिला शासक थीं। वे भारत के इतिहास की कुछ नारी शासिकाओं में से एक थी।

रानी रूदाबाई

ये कर्णावती राज्य (वर्तमान अहमदाबाद) के वीर क्षत्रिय राजा राणा वीर सिंह बघेला की विधवा रानी थी। 1497 ई0 में तुर्क सुल्तान बघारा ने कर्णावती पर हमला कर दिया। वीरांगना क्षत्राणी ने बघारा के पेट में कटार मारकर उसका अंत कर दिया और उसकी सेना को भी मार भगाया। रानी की सेना में 2500 धनुषधारी क्षत्राणी वीरांगनाएं भी थी।

रानी दुर्गावती

महारानी दुर्गावती कालिंजर के क्षत्रिय राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। राजा संग्राम शाह के पुत्र दलपत शाह से उनका विवाह हुआ था। पति के निधन के बाद रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला (मध्यप्रदेश) का शासन संभाल लिया। दुर्गावती ने अकबर के साथ युद्ध मे वीरतापूर्ण तरीके से अपनी सेना का नेतृत्व किया था। उन्होंने अकबर के जुल्म के आगे झुकने से इंकार कर स्वतंत्रता और अस्मिता के लिए युद्ध भूमि को चुना और अनेक बार शत्रुओं को पराजित करते हुए 1564 में अपना बलिदान दे दिया था।

रानी कर्णावती (कर्मवती)

कर्मवती बूंदी के राजा नर्बद हाड़ा चौहान की कन्या थी जो मेवाड़ के महाराणा सांगा की महारानी थी। महाराणा का स्वर्गवास होने के बाद गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने 1535 ई0 में चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया। मेवाड़ की हार होने पर रानी कर्मवती के नेतृत्व मे हजारों क्षत्राणी ललनायें 8 मार्च 1535 को जौहर अग्नि की भेंट चढ़ गईं। जौहर से पहले महारानी कर्मवती ने 14 वर्ष के अपने राजकुमार उदय सिंह को क्षत्राणी पन्ना खींची चौहान के संरक्षण में छोड़ दिया था। किंतु इस बात को लेखकों ने उदय सिंह के दूध पीते बचपन की धाय माता गुज्जरी पन्नाधाय से जोड़ दिया। जबकि उदय सिंह के बदले अपने पुत्र चंदन सिंह का बलिदान क्षत्राणी पन्ना खींची ने दिया था।

मीराबाई

ये मेड़ता के राजा राव दूदा राठौड़ की पौत्री तथा कुड़की के जागीरदार रतन सिंह की पुत्री थी। मीरा का जन्म 1498 ई0 में हुआ। मीरा बचपन से ही कृष्ण भक्त हो गई। इनकी शादी मेवाड़ के महाराणा सांगा के वीर पुत्र राजकुमार भोजराज के साथ हुई। किंतु शीघ्र ही भोजराज एक युद्ध में बलिदान हो गए। बस फिर तो शेष जीवन मीरा ने कृष्ण भक्ति में ही व्यतीत किया। 1534 ई0 में उन्होनें मथुरा-वृंदावन में ही निवास किया। ये महाराणा प्रताप की सगी ताई थीं।

क्षत्राणी पन्ना खींची

क्षत्राणी माता पन्ना खींची चौहान जिन्हें महारानी कर्मवती ने 1535 ई0 के दूसरे जौहर से पहले अपने 14 वर्ष के पुत्र उदय सिंह की संरक्षिका घोषित किया। इस पन्ना खींची ने उदय सिंह के स्थान पर अपने पुत्र चंदन सिंह का बलिदान दिया। यह बलिदान विश्व के सभी बलिदानों से श्रेष्ठ है। अपनी आंखों के सामने पुत्र का स्वयं बलिदान देने के लिए बहुत बड़े दिल की आवश्यकता है।

रानी नायकी देवी

कदम्ब राज्य के राजा परमादि चन्देल की पुत्री नायकी देवी युद्ध कला में बड़ी निपुण थी। वह पाटण-गुजरात के राजा अजयपाल सोलंकी की विधवा रानी थी। अपने छोटी आयु के पुत्र राजा मूलराज द्वितीय की संरक्षिका थी। 1178 ई0 में मौहम्मद गोरी की सेना को रानी नायकी देवी ने इतनी बुरी तरह से हराया की मुड़कर गुजरात की तरफ मुंह करने की कभी मौहम्मद गोरी की हिम्मत नहीं हुई।

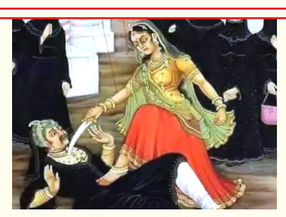

किरण देवी

मेवाड़ के महाराणा प्रताप के छोटे भाई शक्ति सिंह की पुत्री थी और उसका विवाह बीकानेर के प्रसिद्ध राठौड़ राजपूत वंश में उत्पन्न पृथ्वीराज राठौड़ के साथ हुआ था। पतिव्रता और साहसी रानी ने प्राणों की बाजी लगाकर न केवल अकबर से अपनी इज्जत की रक्षा की, अपितु भविष्य में नारियों को उसकी वासना का शिकार बनने से भी बचा लिया। अकबर जैसे सम्राट को भी नौरोज मेला बंद कर देने के लिए विवश कर देने वाली इस वीरांगना का साहस अत्यंत प्रशंसनीय है। उसने अकबर को नीचे गिराकर उसकी छाती पर कटार रख दी थी। अकबर ने माफी मांगकर अपनी जान बचाई।

जीजाबाई

चंद्रवंशी क्षत्रिय लखुजी जाधव की पुत्री जीजाबाई सिसोदिया वंशी वीर योद्धा शाहजी भोंसले को ब्याही थी। शास्त्र का वचन है ''माता निर्माता भवति'' इस वचन के तहत जीजाबाई ने अपने पुत्र इतिहास प्रसिद्ध वीर शिवाजी को साहसी और युद्ध पारंगत बनाने में कोई कसर नही छोड़ी। उसी का परिणाम था कि शिवाजी ने रायगढ़ को अपने स्वतंत्र राज्य के रूप में औरंगजेब की छाती पर स्थापित किया।

मंगलावती

भाटी वंश में जन्मी वीरांगना क्षत्राणी मंगलावती आसकरण राठौड़ की धर्मपत्नी थीं। जैसे जीजाबाई ने शिवाजी को महान बनाया उसी प्रकार मंगलावती ने अपने पुत्र दुर्गादास राठौड़ को एक महान चरित्रवान योद्धा बनाया। विद्वानों का कहना है कि यदि राजपूत चरित्र को सर्वांश में जानना हो तो दुर्गादास राठौड़ के जीवन चरित्र को जान लेवें। अपने चरित्र में संपूर्ण राजपूतीत्व का दर्शन कराने वाले हैं दुर्गादास राठौड़। यह सब माता मंगलावती की कृपा से ही हो सका।

सारंधा

सारंधा एक बड़ी ही आदर्श क्षत्राणी थी। इनका विवाह वीर चंपत राय बुंदेला के साथ हुआ था। ये पति के साथ युद्ध में भाग लेकर अपना वीरांगना होने का परिचय देती थी। इतिहास प्रसिद्ध वीर छत्रसाल बुंदेला का जन्म इसी वीरांगना माता के गर्भ से हुआ था। उस वीर छत्रसाल बुंदेला ने सदैव औरंगजेब के नाक में दम करके रखा और अपने पन्ना राज्य का निरंतर विस्तार किया।

हाडी रानी (इंद्र कंवर)

सलूंबर के जागीरदार रावत रतन सिंह चुंडावत हाडी रानी को विवाह करके ही लाए थे तभी महाराणा राज सिंह का संदेश आ पहुंचा कि मैं किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमति की प्रार्थना पर उसे ब्याहने जा रहा हूं। इस विवाह का रोकने के लिए औरंगजेब ने सेना भेजी है। तुम शत्रु की उस सेना को किशनगढ़ जाने से रोको। रावत रतन सिंह युद्ध के लिए जा रहे थे। किंतु रास्ते में उन्होनें हाड़ी रानी से कोई निशानी लेने को दूत को भेजा। हाड़ी रानी समझ गई कि मेरे मोह में मेरे पति दतचित होकर नहीं लड़ पायेंगे। यदि इनकी हार हुई तो राज्य के साथ मेरा भी अपमान होगा। इसलिए उस वीरांगना हाड़ी रानी इंद्र कंवर ने अपनी दासी को समझा कर अपना शीश अपने हाथों से काटकर दूत के सुपुर्द करवा दिया। हाडी रानी का नाम इंद्र कंवर था।

धार राज्य की द्रौपदी बाई

धार राज्य के राजा ने स्वर्गवास से पहले अपने 13 वर्ष के अल्पव्यस्क छोटे भाई आनन्द राव को गोद ले लिया था तथा बड़ी रानी द्रौपदी बाई को उसकी संरक्षिका घोषित कर दिया था। आनन्द राव को अंग्रेजों ने राजा तो मान लिया था, किंतु वे सरंक्षक बनी रानी से खुश नहीं थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रानी ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। अंग्रेजों की रोक के बाद भी रानी ने नये सैनिक भर्ती जारी रखी। अंग्रजों ने बड़ी सेना चढ़ाकर धार के किले को तहस-नहस कर दिया। रानी गुप्त मार्ग से निकल गई।

वीरांगना ताज कुंवरि

ये कानपुर के पास किशोरा राज्य के चंदेल वंशी क्षत्रिय राजा सज्जन सिंह की पुत्री थी। दिल्ली से राजकुमारी का डोला देने का फरमान आया, किंतु साहसी राजा ने फरमानी को धमका कर भेज दिया। बस फिर क्या था मुगल सेना चढ़ आई। ताज कुंवरि भी युद्ध कला में बड़ी पारंगत थी। उसने अपने भाई लक्ष्मण सिंह के साथ महल के बुर्ज पर चढ़कर तीरों की ऐसी बरसात की कि शत्रु के दांत खट्टे हो गए। किंतु भारी सेना के आगे छोटे राज्य के सैनिक कब तक अड़ते। ताज कुंवरि ने अपने भाई से कहा कि तलवार से मेरी गर्दन काट दो। मैं दुष्टों के दर्शन करना नहीं चाहती।

रानी जयराज

वीरांगना क्षत्राणी जयराज हसांवर के राजा रणविजय सिंह की रानी थी। जब राजा पति राम जन्मभूमि मुक्ति अभियान में अपनी सेना सहित बलिदान हो गए तो रानी जयराज ने राज्य संभाला। राम जन्मभूमि मुक्ति के लिए रानी ने छापामार पद्धति से मुगल सेना पर 10 आक्रमण किए और दसवें में जीतकर जन्म भूमि को अपने अधिकार में ले लिया, किंतु एक मास बाद हुमायूं की विशाल सेना ने रानी और उनकी सेना को बलिदान करके जन्मभूमि पर पुन: अपना कब्जा जमा लिया।

रानी चेन्नम्मा

वीरांगना चेन्नम्मा कर्नाटक में चंद्रवंशी क्षत्रिय राजपूतों की काकतीय शाखा के सामंत घुलप्पा की पुत्री थी। कित्तूरगढ़ के क्षत्रिय नरेश राजा मल्लर्सज से इनका विवाह हुआ। राजा के स्वर्गवास बाद राज्यभार को रानी चेन्नम्मा ने संभाला। किंतु अंग्रेजों ने उन्हें शासिका के रूप में स्वीकार न करके उन पर आक्रमण कर दिया। प्रथम दौर में रानी ने सेना सहित अंग्रेजों को धूल चटा दी। किंतु दूसरे दौर में वे पकड़ी गईं। उन्हे तोप के सामने खड़ी करके बारूद से उड़ा कर बलिदान कर दिया गया।

SPONSORED BY :

SAGAR INDUSTRIES

Mfg. of : All Types of Food Grain Dryer, Ricemill Paraboiling & Steam Plant, Steam Radiators of Copper, S.S, M.S & All Types of Machinery & Tools.

Behind Hafed, Ganger Padhana Road, Taraori (Karnal)- 132116
sagarindustries517@gmail.com
www.sagarindustries.in
81999-91013
81999-91012

ISHWAR RANA
Director

मुख्य पदाधिकारीगण

संरक्षक
कर्नल देवेन्द्र सिंह 'वीरचक्र'
94160-28189

अध्यक्ष
डा. नरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान, पधाना
94164-05335

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
कुलदीप सिंह चौहान, उचाना
98963-90690

महासचिव
एडवो. बृजपाल सिंह मढाड, ऊँचा समाना
99919-85000

कोषाध्यक्ष
अजमेर सिंह पंवार, औंगद
98121-43088

चित्रावली के संकलक, सृजक और लेखनकर्ता

बलवीर सिंह चौहान घरौंडा
93546-02556
एवं
सदस्यगण
इतिहास संकलन एवं संरक्षण समिति, करनाल

Designed & Printed By:
Sandeep Rana 74539-64000
Sachin Khanchi 92680-12000
DIGITAL GRAPHICS & PRINTING
All Types of Flex Printing & Advertisement
Meerut Road, Near K.R. Cinema, Karnal (HR.)
Printed on : 18.10.2023

जय क्षात्र धर्म ओ३म् वीर भोग्या वसुंधरा

महाराणा प्रताप स्मृति भवन समिति, सैक्टर- 8, करनाल
(राजपूत महासभा करनाल, हरियाणा)

आदिवराह सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट मिहिरभोज प्रतिहार, राज्य कन्नौज, राज्यकाल 836 से 885 ई.। अरब मुस्लिमों को भारत भूमि में घुसने नहीं दिया । इनके पूर्वज राजाओं द्वारा गुर्जरत्रा राज्य पर राज करने से उनको गुर्जरेश्वर, गुर्जरेन्द्र, गुर्जरराज उपाधियां मिलने से गुज्जर जाति के लोग इन्हें गुज्जर जाति का सम्राट बताने की अफवाहें फैला रहें है। जबकि ये शुद्ध रूप से क्षत्रिय हैं।

महाभारत काल के पश्चात के क्षत्रिय सम्राटों, राजाओं, महाराजाओं एवं वीर योद्धाओं के चित्र

14वीं सदी में क्षत्रियों को राजपूत कहना भी प्रारम्भ हुआ । क्षत्रिय और राजपूत शब्द एक दूसरे के पूरक हैं । देश के समस्त सनातनी भाई अपने इन महान पूर्वजों को आदर्श मानते हुए इन पर गर्व करें तथा अपनी श्रद्धा प्रकट करते रहें । राजपूतों का कोई भी वंश अग्निवंश नही है । यह झूठी कल्पना 16वीं सदी मे चौहान पृथ्वीराज रासो में घुसाई गई है । चौहान, प्रतिहार, परमार और चालुक्य इनमें पहले तीन वंश सूर्यवंशी है चौथा चालुक्य चंद्रवंशी है। चारों वंशों के पूर्वज झूठी अग्निकथा से भी हजारों वर्षो पहले से मौजूद रहते आये।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट विग्रहराज चौहान

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट विग्रहराज चौहान- चतुर्थ, सारे आर्यावर्त के सम्राट, राजधानी अजमेर-दिल्ली। राज्यकाल 1150-1164 ई., तमाम मुस्लिमों को मारकर आर्यावर्त देश को वास्तव में ही आर्यों का देश बनाने वाले । भगवान श्रीराम का सोने का बड़ा सिक्का जारी किया । इतिहासकार डॉ. दशरथ शर्मा ने इनके सपादलक्ष साम्राज्य के काल को स्वर्ण युग बताया है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय वीर राजा पोरस

झेलम-चेनाब नदी क्षेत्र पर पुरुवास नामक राज्य, राज्यकाल 340 से 317 ई.पू.। इन्होंने सिकंदर को हराया, ऐसा यूनान के इतिहासकारों ने भी लिखा। किंतु कुछ इतिहासकार झूठे ही सिकंदर की जीत बताते हैं । ऐसा सारा वर्णन भारतीय इतिहास की भयंकर भूले नामक ग्रंथ में है, देखें भूल क्रमांक- 9.

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य

राज्य मगध, राजधानी पाटलिपुत्र, राज्यकाल 322 से 298 ई.पू.। 1069 ई. के महाराष्ट्र खानदेश के बाघली शिलालेखा में मौर्य वंशियो को सूर्यवंशी सम्राट मांधाता के वंशज लिखा है। मोरिय क्षेत्र से जब क्षत्रिय योद्धा अपने साथ अपने कामगार लोगों को लेकर अन्य स्थानों पर जा बसे, तो वहां पिछले निवास स्थान मोरिय से ही कामगार जातियां भी मौर्य कहलाई और क्षत्रिय भी मौर्य कहलाए गये जोकि वास्तव मे शाक्य वंशी क्षत्रिय हैं।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट अशोक

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट अशोक (सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के पौत्र) राज्य मगध, राजधानी पाटलिपुत्र, राज्यकाल 273 से 232 ई.पू.। कलिंग के युद्ध मे बड़ी संख्या मे शत्रु सेना के संहार के होने से दुखी हो गये तब सम्राट अशोक ने बौद्ध मत को ग्रहण कर लिया था। और देश में कई स्थानों पर शांति संदेश लिखवाकर ऊंचे-ऊंचे स्तंभ लगवाये जो लगभग 2300 साल बाद आज भी शान से खड़े हैं।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट विक्रमादित्य

राज्य मालवा प्रदेश, राजधानी उज्जैन राज्यकाल 57 ई.पू. से प्रारंभ होकर 100 वर्ष राज्य किया। आर्यावर्त के आसपास के अनेक देशों के विजेता। विक्रमी संवत इन्हीं के नाम से चलता है। विक्रमी संवत को नौवीं सदी से पहले तक मालव संवत और कृत संवत कहा जाता था।

चंद्रवंशी क्षत्रिय समुद्रगुप्त

राज्य मगध, राजधानी पाटलिपुत्र, राज्यकाल 335 से 375 ईस्वी। देश में इतनी समृद्धि कर दी थी कि इनका राज्यकाल स्वर्ण युग कहलाया। शिलालेखों मे गुप्तवंशी राजाओं को चंद्रवंशी बताया गया है। देखे ब्रह्मावर्त आर्यावर्त भारतवर्ष की देव-दिव्य और कीर्तिशाली आत्मायें ग्रंथ पृ0 155 लेखाक बलबीर सिंह चौहान, घरौंड।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट चाहमान

राज्य नगर राज्य (प्राचीन मालव नगर) राजधानी पुष्कर-अजमेर, राज्यकाल 515 से 550 ई.। इसी सम्राट के आगामी वंशज चौहान राजवंशी कहलाए। सतयुग और त्रेता युग में सूर्यवंश इक्ष्वाकु, काकुत्स्थ और रघु को पाकर तीन प्रवर वाला था। कलियुग में सम्राट चाहमान को पाकर सूर्यवंश चार प्रवर वाला बन गया। पृथ्वीराज विजय महाकाव्य (सर्ग - 2 श्लोक 44) चाहमान के पिता का नाम राजा विरोचन था जो राजस्थान टोंक जिला क्षेत्र के 'नगर' राज्य के राजा थे जिसके माता-पिता थे वह अग्नि से कैसे उत्पन्न हुआ ?

सूर्यवंशी मालव क्षत्रिय सम्राट यशोधर्मा

राज्य मालवा, राजधानी मंदसौर, मालव संवत अर्थात विक्रम संवत 589 यानि 532 ई. का इनका सौंदणी शिलालेख मध्यप्रदेश में उपलब्ध है। इन्होंने दुर्दांत हूण आक्रमणकारी मिहिरकुल की विशाल सेना को बुरी तरह परास्त करके भगाया था।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट हर्षवर्धन

राज्य का नाम श्रीकंठ, प्रारंभिक राजधानी स्थानेश्वर (कुरुक्षेत्र), बाद में कन्नौज, राज्यकाल 606 से 647 ई. इनके दरबारी कवि बाण भट्ट ने 'हर्ष चरित' के चौथे उच्छ्वास में इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय लिखा है। विद्यालयी पुस्तकों मे इन्हें क्षत्रियों अर्थात् राजपूतों से अलग करने का असफल प्रयास किया गया है।

सूर्यवंशी गहलोत राजा बाप्पा रावल (कालभोज)

मान मोरी क्षत्रिय से मेवाड़ राज्य को जीता। राजधानी चित्तौड़गढ़, राज्यकाल 734 से 753 ई. । इन्होनें अपने राज्यकाल के दौरान मुस्लिम आक्रमणकारियों को भारत से दूर भगाकर रखा।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट अमोघवर्ष

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट अमोघवर्ष राष्ट्रकूट (राठौर), राज्य बदामी, राज्यकाल 815 से 877 ई. । अमोघवर्ष के पूर्वज राजा कृष्णदेव राष्ट्रकूट द्वितीय ने एलोरा के पहाड़ को काटकर भव्य शिव मन्दिर का निर्माण करवाया । जिसे देखकर आज भी लोग हैरत में पड़ जाते है।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट नागभट्ट प्रतिहार

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट नागभट्ट प्रतिहार द्वितीय । अपने मालवा राज्य को फिर से वापिस जीत लिया तथा कन्नौज को भी जीतकर वहां प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी स्थापना करने वाले महापराक्रमी सम्राट, राज्यकाल 800 से 833 ई.।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा देवपाल

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा देवपाल, राज्य बंगाल, राजधानी मुंगेर, राज्यकाल 810 से 850 ई.। सांभर के चौहान क्षत्रिय राजा दुर्लभ देव- प्रथम की पुत्री इनकी महारानी थी। पाल वंश के सबसे शक्तिशाली नरेश थे। आसाम और उड़ीसा को भी जीत कर इन्होंने अपने अधीन कर लिया था। शक्तिशाली सम्राट मिहिर भोज प्रतिहार को भी हराकर उनके पूर्वी भारत पर आक्रमण को असफल कर दिया था।

क्षत्रिय महाराजा महेंद्रपाल प्रतिहार

ये पराक्रमी सम्राट मिहिरभोज के पुत्र थे। उनके पश्चात् कन्नौज की राजगद्दी पर विराजमान हुए । इनकी माता का नाम महारानी चंद्रभट्टारिका था । ऊना के अभिलेख में इन महाराजा का नाम महेंद्रायुद्ध भी है। अत्यंत निर्भीक होने से इनके दरबारी कवि राजशेखर ने इन्हें 'निर्भय राज' की उपाधि दी तथा अपनी पुस्तक कर्पूर मंजरी में इन्हें 'रघुवंश का चूड़ामणि' कहा है। इनका राज्यकाल 885 ई. से 910 ई. तक रहा।

सूर्यवंशी क्षत्रिय महाराजा वाक्पतिराज चौहान

राज्य सपादलक्ष साम्राज्य, चौहान वंश की आरम्भिक राजधानी साम्भर के 5वें चौहान शासक। राज्यकाल 917 से 944 ई.। 27 वर्ष के राज्यकाल में ये 188 युद्धों को लड़ने वाले महान योद्धा थे, पृथ्वीराज विजय महाकाव्य ग्रंथ सर्ग-5 श्लोक-40 में यह बात बताई गई हैं।

चंद्रवंशी क्षत्रिय चोल राजा राजराजा महान

राज्य चोलमंडल, राजधानी तंजावुर, राज्यकाल 985 से 1016 ई.। राजधानी में 14 मंजिला 190 फुट ऊंचा अद्भुत मंदिर बनवाया जिसकी छत 25 वर्ग फुट 80 टन वजनी एक ही पत्थर द्वारा निर्मित है। पश्चिमी जगत के भवन निर्माण इंजीनियर आश्चर्यचकित हैं कि उस जमाने में इतनी ऊंचाई पर इतने भारी पत्थर का एक ही शिलाखंड कैसे पहुंचाया गया ?

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा गोगा देव चौहान (लोक देवता)

राज्य ददरेवा-राजस्थान, बलिदान 1012 ई., गोगाजी सहित उनकी चार पीढ़ियों के 47 पारिवारिक योद्धा महमूद गजनवी के साथ हुए युद्ध में बलिदान देकर वीरगति को प्राप्त हुए थे। ये हिंदुओं के महान लोक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। उत्तर भारत के अधिकांश गांवों मे इनके मंदिर बने हुए हैं। इनको जाहरवीर गोगा देव के मंदिर कहा जाता है।

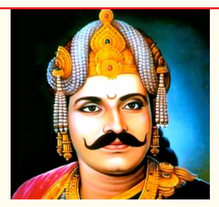

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजाभोज परमार

राज्य मालवा, राजधानी धार (मध्यप्रदेश) राज्यकाल 1010 से 1055 ईस्वी। वेदों के ज्ञाता। उच्चकोटि के लेखाक और उच्चकोटि के योद्धा भी। भोज ने राजधानी धार में सरस्वती कण्ठाभरण महाविद्यालय भोजशाला का निर्माण करवाया। जनता जनार्दन में राजा भोज का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा अनंगपाल तोमर (तंवर)

राज्य दिल्ली, राज्यकाल 1041 से 1082 ई. । इनके पूर्वज राजा अनंगपाल तंवर प्रथम ने 736 ई. में दिल्ली की स्थापना की थी। तोमरवंशी क्षत्रियों को राजपूत वंशावलियों मे महाभारतीय अर्जुन का वंशज बताया गया है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय सम्राट जयसिंह सिद्धराज चालुक्य (सोलंकी)

राज्य गुजरात, राजधानी अन्हिल-पाटन, राज्यकाल 1084-1143 ई.। इनकी छोटी पुत्री कांचन देवी अजमेर के सम्राट अर्णोराज चौहान को व्याही थी जिनके गर्भ से महाराजा सोमेश्वर का जन्म हुआ जोकि विश्वविख्यात वीर सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के पिता थे। तमिल भाषा में चालुक्य शब्द का उच्चारण शुलुक्कि हुआ जिसका अपभ्रंस सोलंकी शब्द में हो गया। अत: चालुक्य और सोलंकी एक ही वंश है।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा जगदेव पंवार

राज्य कुंतल देश दक्षिण भारत, राज्यकाल 12वीं सदी पूर्वार्द्ध। पारिवारिक राज्य मालवा-धारा नगरी। ये प्रसिद्ध राजा भोज परमार के सगे भतीजे थे। इनकी बहुत सी यशस्वी बातें प्रचलित हैं।

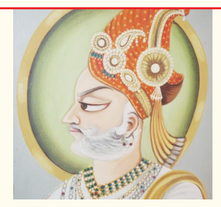

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा जैसल भाटी

चंद्रवंशी क्षत्रियों के यदुवंश की भाटी शाखा के राजा जैसल, 1153 ई. से लोद्रवा पर राज्य करते हुए 1155 ई. में जैसलमेर दुर्ग की नींव रखकर भव्य दुर्ग निर्माण करके 1168 ई. तक राज्य किया। उत्तर भारत की रक्षा में मजबूत भाटी वंश ने ''उत्तर भड़ किवाड़ भाटी'' की यशस्वी उपाधि को धारण किया।

चंद्रवंशी क्षत्रिय लक्ष्मण सेन

चंद्रवंशी क्षत्रिय लक्ष्मण सेन, राज्य बंगाल, राजधानी नदिया, राज्यकाल 1178 से 1206 ई.। बंगाल के सेन वंशी क्षत्रिय राजाओं में सबसे शक्तिशाली। बिहार और उड़ीसा के बहुत से क्षेत्र को जीतकर अपने राज्य में मिलाया।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान-तृतीय

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान- तृतीय । आर्यावर्त के सम्राट, राजधानी अजमेर - दिल्ली, राज्यकाल 1178 से 1192 ई.। छ: भाषाओं के ज्ञाता, श्रीराम की भुजाओं की भांति अजान बाहु, शब्दभेदी बाण के चलाने वाले।

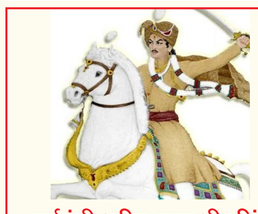

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा धीर सिंह पुंडीर

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा धीर सिंह पुंडीर सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के सामंत सेनापति, एक महान पराक्रमी योद्धा। 12वीं शताब्दी।

सूर्यवंशी क्षत्रिय महाराजा हम्मीर देव चौहान

सूर्यवंशी क्षत्रिय महाराजा हम्मीर देव चौहान सम्राट पृथ्वीराज चौहान तृतीय के पौत्र के भी पड़पौत्र (यानि छटी पीढ़ी के वंशज) राज्य रणथम्भौर, राज्यकाल 1282 से 1301 ईस्वी, अत्यंत महापराक्रमी एवं शरणागत के रक्षाक। अल्लाउद्दीन खिलजी की सेना को दो बार हराया। तीसरी बार खिलजी धोखा देकर दुर्ग के किवाड़ खुलवाने मे सफल हुआ। 10 जुलाई 1301 ई0 को दुर्ग मे शाका और जौहर हुआ।

सूर्यवंशी क्षत्रिय चौहान वीरमदेव सोनगरा

पिता राजा कान्हड़ देव के बलिदान के पश्चात पुत्र वीरमदेव सोनगरा, जालौर-राजस्थान के राजा बने और युद्ध में पहले ही दिन अलाउद्दीन खिलजी से घनघौर युद्ध करते हुए 1311 ई0 में बलिदान हो गये। खिलजी ने अपनी बेटी फिरोजा से शादी के लिए गुजरात का सुबा तथा 52 करोड़ के हीरे-जवाहरात दहेज में देने का लालच दिया, किंतु क्षत्रिय मर्यादा के रक्षाक वीरमदेव ने यह प्रस्ताव ठुकरा कर युद्ध स्वीकार किया।

महाराणा कुम्भा (कुम्भकर्ण)

सूर्यवंशी क्षत्रिय गहलोत कुल की सिसोदिया शाखा के महाराणा कुम्भा (कुम्भकर्ण)। राज्य मेवाड़, राजधानी चित्तौड़गढ़, राज्यकाल 1433 से 1468 ई.। उद्भट वीर एवं उच्च कोटि के भवन निर्माता। कुंभलगढ़ दुर्ग और उसकी 15 फुट चौड़ी 36 किलोमीटर लंबी दीवार तथा चित्तौड़गढ़ दुर्ग में विजय स्तंभ के निर्माता।

महाराणा सांगा (संग्राम सिंह)

सूर्यवंशी क्षत्रिय गहलोत कुल की सिसोदिया शाखा के महाराणा सांगा (संग्राम सिंह)। राज्य मेवाड़, राजधानी चित्तौड़गढ़, राज्यकाल 1509 से 1528 ई.। 84 घावों वाला परम प्रतापी योद्धा। युद्धों में एक बांह कटी, एक आंख चली गई तथा एक टांग कट गई फिर भी इनसे मुगल सैनिक बड़े भयभीत रहते थे।

सूर्यवंशी प्रतिहार क्षत्रिय मोहन सिंह मढाड़

सूर्यवंशी प्रतिहार क्षत्रिय मोहन सिंह मढाड़। कैथल जिले के गांव शिल्लाखेड़ा के एक महानायक योद्धा। 1530 ईस्वी में बाबर की विशाल सेना को नाकों चने चवाने के बाद यशस्वी बलिदान दिया। गांव के युवा क्षत्रियों को ही लेकर इतने बड़े बादशाह से भिड़ जाना बहुत बड़े उत्साह की बात है।

यदुवंशी राजा कृष्णदेव राय

चंद्रवंश के यदुवंशी राजा कृष्णदेव राय। राज्य विजयनगर राज्यकाल 1509 से 1529 ईस्वी । ये अत्यंत समृद्ध और यशस्वी राजा थे। बहुत ही प्रगतिशील, न्यायाकारी एवं प्रजाप्रिय राजा थे । इन्होंनें बहुत ही सुंदर भवनों व मंदिरों का निर्माण करवाया।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राव चन्द्रसेन राठौड़

जोधपुर के राजा, राज्यकाल एवं संघर्ष काल 1562 से 1581 ई.। मुगल अकबर से निरंतर 15 वर्ष युद्धरत रहे। इनका संघर्ष महाराणा प्रताप और चौहान वंशी वीर सुरताण देवड़ा से किसी प्रकार कम नहीं था।

सूर्यवंशी क्षत्रिय अमरसिंह राठौड़

सूर्यवंशी क्षत्रिय अमरसिंह राठौड़ जोधपुर नरेश गज सिंह राठौड़ के बड़े पुत्र, 17वीं सदी के वीर, नागौर परगने के शासक। आगरा के किले में भरे दरबार बादशाह शाहजहां के प्रधानमंत्री सलावंत खां की गर्दन काटने वाले साहसी योद्धा।

सूर्यवंशी राजा सुरताण देवड़ा

हिन्दूसूर्य सूर्यवंशी चौहान क्षत्रिय राजा सुरताण देवड़ा, राज्य सिरोही -राजस्थान, राज्यकाल 1572 से 1610 ई.। आयु 51 वर्ष, युद्ध लड़े 52, अकबर से हल्दीघाटी जैसा दत्तानी का युद्ध लड़ा तथा मुगल सेना के तीनों सेनापतियों के सिर काटकर युद्ध जीत लिया।

गहलोत वंशी सिसोदिया महाराणा प्रताप

क्षत्रिय कुलदीपक गहलोत वंशी सिसोदिया महाराणा प्रताप, राज्य मेवाड़, राजधानी उदयपुर, राज्यकाल 1572 से 1597 ई.। मुगल अकबर की तोबा बुलवाने वाले विश्वविख्यात वीर। इनकी वीरता के बारे में भारतीय ही नहीं बहुत से विदेशी भी परिचित हैं।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा रामशाह तोमर

ग्वालियर के निर्वासित चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा रामशाह तोमर। 18 जून 1576 को हुई हल्दीघाटी लड़ाई में अपनी तीन पीढ़ियों को खपाने वाले परम प्रतापी बलिदानी योद्धा। ये ग्वालियर के महान राजा मान सिंह तोमर के पौत्र थे।

सूर्यवंशी क्षत्रिय जोधपुर सेनापति दुर्गादास राठौड़

सूर्यवंशी क्षत्रिय जोधपुर सेनापति दुर्गादास राठौड़। 17वीं सदी का अनथक जुझारु योद्धा। जोधपुर के सिंहासन पर बालक अजीत सिंह राठौड़ को विराजमान करने वाला वीर। एक महान यशस्वी राजपूत योद्धा।

सूर्यवंशी गहलोत क्षत्रिय सिसोदिया महाराणा राजसिंह

सूर्यवंशी गहलोत क्षत्रिय सिसोदिया महाराणा राजसिंह। राज्य मेवाड़, राजधानी उदयपुर। राज्यकाल 1652 से 1680 ई.। ''जब मेरे एक लाख राजपूत योद्धाओं के सिर कट जाएंगे तब ही आलमगीर (औरंगजेब) श्री नाथ जी की मूर्ति को हाथ लगा सकेगा''। ये एक महान यशस्वी राजपूत योद्धा थे।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा छत्रशाल बुंदेला

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा छत्रशाल बुंदेला, राज्य पन्ना (मध्य प्रदेश) राज्यकाल 1675 से 1731 ई.। आजीवन औरंगजेब के नाक में दम करके रखने वाला अत्यंत स्वाभिमानी वीर। ये राजा चंपतराय बुंदेला के वीर पुत्र थे।

वीर राजपूत राजा शिवाजी

सूर्यवंशी क्षत्रिय गहलोत वंश की भोंसला शाखा का वीर राजा शिवाजी राज्य रायगढ़-महाराष्ट्र। राज्यकाल 1674 से 1680 ई.। शिवाजी ने अपने राज्य स्थापन के पश्चात् मन्त्री मण्डल की पहली सभा में 10 निर्णय लिये जिनमें चौथा निर्णय यह था कि मैं उदयपुर के महाराणाओं का वंशज हूं। (राजा शिवाजी - गोविन्द सखाराम सरदेसाई हिन्दी संस्करण 1962 पृष्ठ 22) शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले ने बीजापुर के शासक अली आदिलशाह-द्वितीय को 1656 ई. में लिखे एक पत्र में अपनी जाति पहचान के रूप में अपने को राजपूत लिखा। (इतिहास मंजरी पूना 1923 लेखाक डी.वी. आप्टे, पृष्ठ.67) किसी अवसर पर बालुशाह, तेज सिंह, रण सिंह नामक इत्यादि योद्धागण इकट्ठे बैठे थे तब वहां महा सिंह शेखावत नाम के एक राजपूत योद्धा ने उनके बीच प्रसंगवश बातचीत में शिवाजी के गुण बताते हुए उन्हें सच्चा और पक्का राजपूत कहा। (ट्रांसलेटिड इन सरकार, हाउस आफ शिवाजी, पृष्ठ-162)

सूर्यवंशी क्षत्रिय वीर राजपूत बंदा बहादुर

सूर्यवंशी क्षत्रिय वीर राजपूत बंदा बहादुर। मुगलों से पंजाब के बहुत बड़े क्षेत्र को पुन: विजित करने वाले योद्धा, सिखों का फिर से परचम लहराने वाला 18 वीं सदी का वीर। ये शुद्ध रूप से क्षत्रिय थे। सूर्यवंश महाप्रकाश (लेखाक डा. बिन्ध्यराज आजमगढ़) में इन्हें अंग्रेजों द्वारा प्रस्तुत लेखों के आधार पर चौहान वंशी राजपूत बताया है। इन्होंनें कभी सिक्खी धारण नहीं की। अपने बलिदान तक ये हिन्दू ही रहे।

SPONSORED BY :

SAGAR INDUSTRIES

Mfg. of : All Types of Food Grain Dryer, Ricemill Paraboiling & Steam Plant, Steam Radiators of Copper, S.S, M.S & All Types of Machinery & Tools.

Behind Hafed, Ganger Padhana Road, Taraori (Karnal)- 132116
sagarindustries517@gmail.com
www.sagarindustries.in
81999-91013
81999-91012

ISHWAR RANA
Director

मुख्य पदाधिकारीगण

संरक्षक
कर्नल देवेन्द्र सिंह 'वीरचक्र'
94160-28189

अध्यक्ष
डा. नरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान, पधाना
94164-05335

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
कुलदीप सिंह चौहान, उचाना
98963-90690

महासचिव
एडवो. बृजपाल सिंह मढाड, ऊँचा समाना
99919-85000

कोषाध्यक्ष
अजमेर सिंह पंवार, औंगद
98121-43088

चित्रावली के संकलक, सृजक और लेखनकर्ता

बलबीर सिंह चौहान घरौंड
93546-02556
एवं
सदस्यगण
इतिहास संकलन एवं संरक्षण समिति, करनाल

Designed & Printed By:
Sandeep Rana 74539-64000
Sachin Khanchi 92680-12000
DIGITAL GRAPHICS & PRINTING
All Types of Flex Printing & Advertisement
Meerut Road, Near K.R. Cinema, Karnal (HR.)
Printed on : 18.10.2023

जय क्षात्र धर्म   ओ३म्   वीर भोग्या वसुंधरा

महाराणा प्रताप स्मृति भवन समिति, सैक्टर– 8, करनाल
(राजपूत महासभा करनाल, हरियाणा)

1857 से 1947 तक के रणबांकुरे राजाओं, जागीरदारों, वीरों और क्रान्तिकारियों की चित्रावली

राजा वीर कुँवर सिंह परमार

अस्सी वर्ष आयु थी उसकी, आया सन् सत्तावन।
फड़क उठी भुजायें वीर की, करने मां को पावन॥

बिहार में जगदीशपुर के राजा। 1857 की क्रांति के महान योद्धा। 80 वर्ष की आयु में अंग्रजों से निरंतर एक साल लड़े और सभी युद्ध जीते। रूसी इतिहासकारों की कमेटी ने इनको 1857 का सबसे श्रेष्ठ योद्धा घोषित किया। एक अंग्रेज ने लिखा था कि शुक्र है कुंवर सिंह 80 वर्ष के बूढ़े थे। यदि वे 18 वर्ष के युवा होते तो निश्चित ही हमे 1857 में ही भारत को छोड़ना पड़ता। भुजा पर अंग्रेज की गोली लगने से अपनी ही तलवार से स्वयं भुजा काट दी ताकि गोली का जहर ना फैले। इस महान वीर का 26 अप्रैल 1858 को स्वर्गवास हो गया था।

राजा तेज सिंह जूदेव चौहान

सम्राट पृथ्वीराज चौहान के एक वंशज जगत मणि जूदेव चौहान ने मैनपुरी में दुर्ग बनाकर वहां से राज्य संचालन किया। इनके वंशज राजा देवब्रह्म जूदेव चौहान के 27वें वंशज राजा तेज सिंह जूदेव चौहान मैनपुरी की राजगद्दी पर 1849 ई. में विराजमान हुए थे। दिल्ली, इलाहाबाद, कानपुर तथा लखनऊ जीटी रोड पर अंग्रेजों को मार भगाने और उनकी रसद लूटने का बड़ा भारी कार्य किया। प्रथम दौर में मैनपुरी पर चढ़कर आई अंग्रेजी सेना को इन्होनें हरा दिया। दूसरे दौर में किसी गद्दार के द्वारा बारूद में आटा मिला देने से इनकी तोपें नहीं चली। तब ये पकड़े गए और आजीवन जेल में प्राण त्याग कर बलिदान हुए।

क्षत्रियों को ही राजपूत भी कहा जाता है इसलिये ये दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। 1857 के संग्राम से पहले ही क्षत्रियों ने अंग्रेजों से कई लड़ाइयां लड़ी। वह बहुत सा इतिहास लुप्त है। नरसिंहगढ़ के महाराज चैन सिंह परमार 24 जुलाई 1824 को, कर्णाटक की राणी चेन्नमा भी 1824 में, नूरपुर के प्रधानमंत्री रामसिंह पठानिया 17 अगस्त 1849 को तथा शेखावटी के शेखावत वीर डूंगर सिंह व जवाहर सिंह भी अंग्रेजों से लड़कर 1853 में बलिदान हुए

म्युटिनी आफ बंगाल आर्मी प्रकाशन के अन्तर्गत अंग्रेज अपनी रेड पंफलेट पुस्तक में पृष्ठ 63 पर लिखते हैं 'प्रथम यह सिपाही (फौजी) विद्रोह ही था, किंतु शीघ्र ही इसका स्वरूप बदल गया और यह एक राष्ट्रीय विद्रोह बन गया। बिहार, अवध, रूहेलखंड, संपूर्ण दोआब जिसमें इलाहाबाद, कानपुर, आगरा और मेरठ मंडल तथा बनारस, आजमगढ़ और गोरखपुर के जिले शामिल हैं इन सब में **राजपूतों के गांवों** ने हमारे शासन को चुनौती दे दी और हमारे विरुद्ध युद्ध का ऐलान कर दिया।' इसके अतिरिक्त राजस्थान के अनेक जागीरदारों ने 1857 के युद्ध में बड़े पैमाने पर लोहा लिया। कहा जाता है कि इस युद्ध में राजपूतों की 51 रियासतें बलिदान की भेंट चढ़ गई। देश मे अनेक गांव फूंक दिए गए व लगभग 70 लाख से भी अधिक क्षत्रियों ने बलिदान दिये। फिर भी कृतघ्न इतिहासकार लिखते हैं कि राजपूतों ने इस युद्ध में कोई भाग नहीं लिया।

चंद्रवंशी राजा मर्दन सिंह जूदेव बुंदेला

ये बड़े ही साहसी वीर और समझदार थे। 1857 में अंग्रेजों ने हिंदू मुस्लिम रूढ़ियों में सुधार के नाम पर राजाओं और नवाबों की एक संयुक्त सभा की। भरी सभा में निर्भीक राजा मर्दन सिंह ने खड़े होकर उन सुधारों की भर्त्सना की। समय आने पर वे अंग्रजों से डटकर लड़े, किंतु पकड़े गए। लाहौर जेल में डाल कर उन्हें बड़ी यातनाएं दी गई। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के ये मुंह बोले भाई थे और युद्ध में इन्होंने रानी की बड़ी सहायता की।

राजा नरपति सिंह

ये उत्तर प्रदेश में रोंहिया गढ़ी के राजा थे। इन्होंने अंग्रेज कमांडर वालपोल के अनेक सैनिकों को मारते हुए अंग्रेजी सेना को भगा दिया। फिर मदद में आए अंग्रेजी कुशल सेनापति होप ग्रंट को मारने का बड़ा भारी कार्य किया जिससे भारत स्थित लॉर्ड कैनिंग तो शोक में डूबे ही बल्कि सारा इंग्लैंड भी शोक में डूब गया। दूसरे दौर में ये पकड़े गए। इनके महल की क्षत्राणियों ने जौहर कर लिया।

राजा देवीबक्स सिंह

ये गोंडा के राजा थे। 1857 के संग्राम की चिंगारी को इन्होंने आग का गोला बना दिया इतनी भयंकर लड़ाइयां लड़ी इन्होंने अंग्रजों से। दूसरे दौर में राज्य छिन जाने पर अंततः ये नेपाल चले गए, जहां 1866 में मलेरिया से इनका स्वर्गवास हो गया।

राणा बेनीमाधव सिंह

ये रायबरेली के अंतर्गत शंकरपुर राज्य के राजा थे। इन्होंने अंग्रजों से 22 महीने तक 20 युद्ध लड़े। अंत में दिसंबर 1858 में नेपाल चले गए वहां अंग्रजों के साथ लड़ाई हुई जिसमें बलिदान हो गए।

राजा निरंजन सिंह चौहान

अंग्रेजी काल में चकरनगर के राजा कुशल सिंह चौहान के बड़े पुत्र थे कुंवर निरंजन सिंह। इन्होनें अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह किया और कई लड़ाइयां लड़ी। देवकली के युद्ध के बाद यमुना और चम्बल नदी के बीच के पारपट्टी के क्षेत्र पर और इसके बाद फिर उन्होनें अपने सैन्यबल के दम पर मुरादगंज पर भी कब्जा कर लिया। फिर ये अपने दलबल को लेकर कालपी लड़ाई में पहुंच गये। मई 1861 में महान क्रान्तिकारी कुंवर निरंजन सिंह चौहान को उनके तीन सेवकों सहित जयपुर से गिरफ्तार करके आजीवन काले पानी की जेल में भेज दिया।

राजा रूप सिंह सेंगर

ये इटावा जिले के अन्तर्गत भरेह रियासत के राजा मुकुट सिंह के द्वितीय पुत्र थे। राजा का स्वर्गवास होने पर बड़े पुत्र प्रताप सिंह देव सेंगर राजा बने, किन्तु 1855 ई. में उनका भी देहान्त हो गया। तब प्रजा की चाहत थी कि रियासत पर अब राजा मुकुट सिंह के द्वितीय पुत्र कुंवर रूप सिंह का अधिकार होना चाहिये। राजा न बनाने पर कुंवर रूप सिंह अंग्रेजों के विद्रोही हो गये। उन्होनें एक बहुत बड़ी सेना खड़ी करके 1857 के संग्राम में अंग्रेजों के विरूद्ध13 लड़ाइयां लड़कर 12 जीती और अंग्रेजों के नाक में दम करके रख दिया।

राजा हनुमंत सिंह

उत्तर प्रदेश प्रतापगढ़ जिले के अंतर्गत ये काला कांकर राज्य के नरेश थे। अंग्रेजों के साथ चांदा के भयंकर युद्ध में 1858 ई. में इनका बलिदान हो गया था। इस युद्ध में इनके पुत्र लाल प्रताप सिंह तथा इनके भाई राजा माधव सिंह भी अंग्रेजों से लड़कर बलिदान हुये।

राजा रामबक्स सिंह

ये बैंस वंशी क्षत्रिय थे। उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के अंतर्गत डौंड़िया खेड़ा जागीर के शासक थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों से भयंकर युद्ध किया। अंत में पकड़े गए और 28 दिसंबर 1859 को इन को फांसी दे कर भारत माता पर बलिदान कर दिया गया।

कुंवर लाल प्रताप सिंह

ये काला कांकर के राजा हनुमंत सिंह जो स्वयं भी इस युद्ध में बलिदान हो गए थे, के बड़े पुत्र थे। चांदा जिला सुल्तानपुर के युद्ध में राजा पिता ने इनको अपनी सेना का मुख्य सेनापति बना कर भेजा। घनघोर युद्ध हुआ। 19 फरवरी 1858 को ये वीरता पूर्वक लड़ते हुए बलिदान हो गए थे। इस युद्ध में इनके चाचा राजा माधव सिंह भी बलिदान हुए। एक परिवार का यह बहुत बड़ा बलिदान था।

राजा लाल माधव सिंह

आप उत्तर प्रदेश में अमेठी के राजा थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रजों से अवध क्षेत्र में कई लड़ाईयां लड़ी। किंतु ये कभी अंग्रेजों की पकड़ में नही आयें। विभिन्न लड़ाईयां लड़ने पर भी ये सुरक्षित रहे। आगे चलकर इनका स्वर्गवास1891 ई. में हुआ।

राजा हरिप्रसाद मल्ल बिसेन

ये बिसेन वंशी क्षत्रिय नरहरपुर के राजा थे। इन्होंने अपने राज्य के अंदर अंग्रेजों की नाक में दम कर के रख दिया, अनेकों को यमलोक पहुंचाया। बदलापुर के बिसेन वंशी बाबू बहादुर सिंह ने आसपास के क्षत्रियों को एकत्र करके अंग्रेजों के विरुद्ध घनघोर संग्राम किया।

राजा विश्वनाथ शाह देव

ये झारखंड के राज्य बड़का गढ़ के राजा थे। इनका नाम भी क्रांति के महानायकों में दर्ज है। इन्होंने छोटानागपुर क्रांति में भाग लिया। 16 अप्रैल 1857 को इनका बलिदान हुआ। देश पर मर मिटने वाले अनेक वीर अंग्रेजों के विरूद्ध मुखर होकर लड़ रहे थे, अपने बलिदान दे रहे थे जिनमें एक ये राजा भी थे।

राजा दरियाव चंद्र गौर

ये काहिंजारी राज्य के राजा थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में इतनी वीरता पूर्वक लड़े कि अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए। इन्होंने अंग्रेजों का तहसील रसूलबाद का खजाना भी लूट लिया था। लड़ते हुए अंत में पकड़े गए और इस तहसील में खड़े नीम पर लटका कर इन्हें फांसी दे दी गई।

राजा अमर सिंह

ये जगदीशपुर के राजा कुंवर सिंह परमार के छोटे भाई थे। बड़े भाई का बलिदान होने के पश्चात राज्य का नेतृत्व किया और 1857 के संग्राम में अंग्रेजों से लंबे समय तक लड़ते रहे। अंत में राज्य का एक–एक सैनिक बलिदान होने पर तथा रानीवास में जौहर होने के पश्चात ये नेपाल चले गए। तब बाद में इनका कुछ पता नहीं चला की क्या हुआ?

राजा उमराव सिंह

ये बिहार रांची के पास ओरमांझी के राजा थे। राजा उमराव सिंह ने 1857 की क्रान्ति का उदघोष किया। उन्होंने विद्रोही भारतीय सैनिकों का साथ दिया जिससे 2 अगस्त 1857 को रांची शहर पर कब्जा कर लिया। इसके बाद भी उन्होनें अंग्रेजों से लम्बा संघर्ष किया और अन्त में वे अपने भाई घासी सिंह सहित धोखे से पकड़ लिये गये और अभियोग चलाये बिना ही फांसी देकर दोनों बलिदान कर दिये गये।

ठाकुर सुरेन्द्र साई चौहान

ये सम्बलपुर के चौथे चौहान वंशी राजा मधुकर साई के सीधे वंशज थे। 1849 ई. में राजा नारायण सिंह चौहान के देहावसान के बाद अंग्रेजों ने सुरेन्द्र साई चौहान को अधिकार न देकर सम्बलपुर पर कब्जा कर लिया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम ने अंग्रेजों को हिला दिया। विद्रोहियों ने सुरेन्द्र साई और इनके भाई के साथ हजारी बाग जेल तोड़कर कैदी भगा दिये। फिर सुरेन्द्र साई ने 1500 सैनिक लेकर गुरिला युद्ध नीति से 1862 ई. तक निरन्तर अंग्रेजों के नाक में दम करके रखा। ये 20 साल जेल में रहे। आखिर 28 फरवरी 1884 को भारत मां के इस लाल का स्वर्गवास हो गया।

ठाकुर अजयरायल सिंह

गोरखपुर जिले के बरहज के आसपास बसे बिसेन वंशी क्षत्रियों के गांव–गांव में अंग्रेजों के विरुद्ध बड़ी भारी क्रांति की। बरहज के पूर्व में नदी के किनारे बसे पैना गांव के क्षत्रियों ने तो कमाल कर दिया। ठाकुर अजयरायल सिंह के नेतृत्व में बिसेन वंशियों ने अंग्रेजी सेना की रसद लूट ली। सैनिकों को नदी में डूबो–डूबो कर मार गिराया। बाद में गोरखा सेना सहित अंग्रेजी बड़ी सेना ने क्रांतिकारियों को बलिदान कर दिया। उनकी औरतों ने जल समाधि लेकर या अग्नि में जौहर करके बलिदान दिये।

ठाकुर कुशाल सिंह राठौड़

ठाकुर कुशाल सिंह राठौड़ जोधपुर राज्य के आउवा जागीर के बड़े जागीरदार थे। स्वतंत्रता संग्राम मे मारवाड़ और उदयपुर के अनेक जागीरदार तथा ऐरनपुरा और डीशा अंग्रेजी छावनियों के 1600 बागी सिपाही इनसे आन मिले थे। क्रांतिकारियों ने कैप्टन मॉक मेशन का सिर काट कर आउवा की गढ़ी पर टांग दिया। दूसरे दौर में अंग्रेजों की बहुत बड़ी सेना ने आउवा गढ़ी को ढ्हा दिया। सरकार ने क्रांतिकारियों की याद में यहां विजय स्तंभ स्थापित किया। बाद में 2018 ई. मुख्यमंत्री विजय राजे सिंधिया ने 450 करोड़ रुपये की लागत से क्रांतिकारियों का विशाल स्मारक आउवा में स्थापित किया।

ठाकुर निशान सिंह चौहान

यह बिहार के सासाराम और चैनपुर परगनों के 62 गांवों के बड़े जमींदार थे। राजा कुंवर सिंह के साथ युद्ध की योजनाएं बनाने में मुख्य सहयोगी थे। आरंभ से अंत तक क्रांति में अद्भुत साहस के साथ सक्रिय रहे। अंत में पकड़े जाने पर इन्हें 9 जून 1858 को फांसी पर चढ़ा कर बलिदान कर दिया गया। राजा कुंवर सिंह और उनके भाई राजा अमर सिंह के बाद ये तीसरी हैसियत के योद्धा थे।

ठाकुर जोधा सिंह

ये उत्तर प्रदेश के फतेहपुर शहर से 50 कि.मी. दूर खजुहा ब्लाक के रसूलपुर गांव के युवा थे मात्र 20 साल की आयु में क्षत्रिय युवकों का एक बहुत बड़ा दल बनाकर 1857 के संग्राम में अंग्रेजों को चुन चुन कर मारा। अंत में पकड़े जाने पर दल के 52 सदस्यों सहित अंग्रेजों ने इमली के पेड़ पर लटका कर बलिदान कर दिए।

ठाकुर सरजूप्रसाद सिंह

जबलपुर– मध्य प्रदेश में विजय राघव गढ़ के ठाकुर सरजू प्रसाद सिंह को जब 1857 की क्रांति की गूंज सुनाई दी तो वे अपने सैकड़ों राजपूत योद्धाओं और सहयोगियों को लेकर अंग्रेजों से जूझ पड़े। उन्होंने रियासत के ब्रिटिश प्रबंधक को मौत के घाट उतार दिया। जबलपुर मिर्जापुर मार्ग को घेर लिया। उन्हें दबाने के लिए कई बार अंग्रेजी सेना आई किंतु खादेड़ दी गई व अंत में अंगेजों ने इस वीर पर भारी फौज कसी करके इनको पकड़कर मृत्यु दंड दे दिया और उनकी विशाल गढ़ी को तोपों से उड़ा दिया।

वीर नारायण सिंह

ये छत्तीसगढ़ के सोनाखान के बड़े जमींदार थे। इन्होंने 1857 में अंग्रेजों को कई बार पटखानी दी। लेकिन अंत में पकड़े गए और 10 दिसंबर 1857 को फांसी पर लटका कर बलिदान कर दिए गए। इनके बलिदान से जनता इतनी बिगड़ गई कि बाद में अंग्रेजों को छत्तीसगढ़ पर कब्जा करना मुश्किल हो गया। उनको जनता द्वारा जगह–जगह इतना तंग किया गया कि उनके नाक मे दम आ गया।

ठाकुर बलभद्र सिंह रैकवार

उत्तर प्रदेश के क्षेत्र में क्रांति की धूम मचाने वाले योद्धा। इन्होनें रेजीमेंट हड्सन हार्स को भी भागने पर मजबूर कर दिया। लेकिन पीछे से अंग्रेजों ने वार करके इस वीर की गर्दन काट दी। फिर भी इनका धड़ निरंतर लड़ता रहा। बड़े जुझारु वीर निकले ये। ऐसे–ऐसे अनेक नवयुवकों ने भारत माता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

कुंवर अब्बु सिंह चौहान

ये हरियाणा गुड़गांव जिले के अंतर्गत बोहड़ा कलां गांव के युवा बड़े जमींदार थे। इन्होंने कई अंग्रेजी थाने फूंक डाले। तावडू में अंग्रेजों को घेर कर मार काट मचा दी। किसी जानकार ने मुखबिरी करके इनको घने जंगल से पकड़वा दिया। अंग्रेज पुलिस इंस्पेक्टर क्रांति छोड़ने के लिए जमीन, पद और सुविधाओं का लालच देने लगा, किंतु इन्होंने हथकड़ी बंधे हुए भी उसके मुंह पर लात मारी। 16 दिसंबर 1857 को पेड़ पर लटका कर इनको फांसी दे दी गई। इनकी सारी संपत्ति भी जब्त कर ली गई।

राजा बजरंग बहादुर सिंह

राजा बजरंग बहादुर सिंह उत्तर प्रदेश प्रतापगढ़ जिले के अंतर्गत भदरी रियासत के राजा थे। आपने गांधी जी का समर्थन किया। अपनी रियासत में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया। असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। आजादी के बाद आपको हिमाचल का राज्यपाल बनाया गया।

तोमर वंशी रामप्रसाद बिस्मिल

ग्वालियर स्टेट के तोमर धार क्षेत्र के गांव शाहजहांपुर में आपका जन्म हुआ। क्रांतिकारियों में आपका नाम जाना माना है। क्रांतिकारी भगत सिंह आपको अपना क्रांति गुरु मानते थे। आप तोमर वंशी क्षत्रिय थे किंतु अत्यंत विद्वान होने के कारण आर्य समाज में आपको पंडित कहा जाता है। प्रसिद्ध काकोरी काण्ड के आप नायक थे। पकड़े जाने पर आपको 19 दिसंबर 1927 को फांसी पर लटका दिया।

ठाकुर महावीर सिंह राठौड़

आपका जन्म उत्तर प्रदेश एटा जिले के अंतर्गत राठौड़ वंशी राजपूतों के ठिकाना राजा का रामपुर के गांव शाहपुर कलां में ठाकुर देवी सिंह राठौड़ के घर 16 सितंबर 1904 को हुआ था। डीएवी कॉलेज कानपुर में पढ़ते समय देश आजादी क्रांति के भाव मन में जाग उठे। ये भक्त सिंह के अनन्य साथी थे। जब आप पकड़े गए तो खातरनाक कैदी समझते हुए अंग्रेजों ने अंड्मान निकोबार की जेल में भेज दिया, जहां पर यह लंबी भूख हड़ताल पर बैठे रहे। भूख हड़ताल खुलवाने के लिए अंग्रेजी सिपाहियों ने धक्के से नाक में दूध की नाली डाल दी जो इनके फेफड़ों में जा घुसी। फेफड़े दूध से भर जाने के कारण जेल में 17 मई 1937 को आपका स्वर्गवास हो गया।

आचार्य उदयवीर सिंह तोमर शास्त्री

आचार्य उदयवीर जी उच्च कोटि के आर्य समाजी विद्वान थे। परिवार में कई बड़े उच्चाधिकारी हुए। लाहौर में पढ़ाते समय भगत सिंह, भगवती चरण वोहरा इत्यादि आचार्य जी के शिष्य थे जिनको ये क्रांति में बहुत मदद करते रहे थे। जब अंग्रेजों को इन पर शक होने लगा तो ये कॉलेज से त्यागपत्र देकर देहरादून चले गए। भक्त सिंह जब बम्ब कांड में पकड़े गए तो आचार्य जी के जानकार मजिस्ट्रेट ठाकुर जगदीश सिंह के पास केस था। आचार्य जी दिल्ली जाकर मजिस्ट्रेट साहब से मिले और कहा कि इन युवकों की पिटाई मत करना। भक्त सिंह ने फांसी से पहले किसी लेखक की ''प्रेम'' नाम की पुस्तक किसी व्यक्ति के माध्यम से आचार्य उदयवीर जी के पास पहुंचाई थी।

ठाकुर रोशन सिंह कठैरिया

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले के अंतर्गत नवादा गांव में एक राजपूत धनवान जमींदार के घर हुआ। आपके पिताजी ने आपको बचपन में ही तलवार और बंदूक चलाना सिखा दिया। युवा होकर आपने पहलवानी शुरु कर दी। आर्य समाज से प्रभावित होकर आप देश आजादी क्रांति में कूद पड़े। आपने गांव–गांव घूमकर आजादी का प्रचार किया। राम प्रसाद बिस्मिल से मिलकर आप उनके क्रांति दल में शामिल हो गए। काकोरी कांड में आप भी शामिल थे। पकड़े जाने पर 37 वर्ष की युवा आयु में आपको फांसी दे दी गई।

तावनी वंशी बाबा पृथ्वी सिंह आजाद

तावनी वंशी बाबा पृथ्वी सिंह आजाद का जन्म 15 सितंबर 1892 ई. को पंजाब के पटियाला जिला के अंतर्गत तावनी वंशीय क्षत्रियों के गांव लालडू में हुआ था। इनके पिता बर्मा में सेवारत थे इसलिए बचपन में आप बर्मा चले गए। क्रांति की गूंज से प्रभावित होकर आप भी भिन्न–भिन्न देशों में भारतीय क्रांतिकारियों से मिलकर प्रेरणा लेते रहे। आपको रूसी क्रांति का अध्ययन करने के लिए रूस में भी भेजा गया। वहां गुप्तचर समझकर पकड़ लिए गए। कई मास बाद जेल से छूटे। भारत में भी आप क्रांति करते बार–बार पकड़े गए और जेलों में डाले गए। एक प्रकार से आपकी सारी उम्र देश आजादी के लिए जेलों में ही बीती। गांधी जी ने आपको एक अच्छा क्रांतिकारी माना था।

आर्य कुंवर सुखलाल चौहान

बुलंदशहर का छोटा अरनिया चौहान वंशी क्षत्रियों का गांव है। यहां ठाकुर टीकम सिंह के छोटे बेटे ठाकुर अमर सिंह जो बाद में महात्मा अमर स्वामी नाम से आर्य समाज के सबसे बड़े शास्त्रार्थ महारथी हुए थे और दूसरे भाई ठाकुर भौम सिंह के छोटे बेटे कुंवर सुखलाल थे जो अपने समय के आर्य समाज के सबसे बड़े भजनोपदेशक थे। क्रांतिकारी होने से आपको कई बार जेल जाना पड़ा। आपके प्रवचन इतने ओजस्वी थे कि एक बार गुरुकुल ज्वालापुर हरिद्वार के कार्यक्रम में जवाहरलाल नेहरु को भी बुलाया गया था। उन्होंने जल्दी जाना था इसलिए उनका लेक्चर पहले करवा दिया गया। उनके तुरंत बाद घोषणा हुई कि अब कुंवर सुखलाल आर्य का भाषण होगा। यह सुनकर जवाहरलाल नेहरु फिर से मंच पर बैठ गए कि इनका प्रवचन तो अवश्य ही सुनूंगा।

हवलदार मेजर चंद्र सिंह गढ़वाली

1857 का स्वतंत्रता संग्राम क्रांतिकारियों और भारतीय अंग्रेजी सैनिकों का मिला जुला संग्राम था। 1857 के बाद सोचा भी नहीं जा सकता था कि कोई फौजी अंग्रेजों के हुकुम को न माने। ''खुदाई खिदमदगार संगठन'' पेशावर शहर में अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत के नारे बुलंद कर रहा था। इनकी निगरानी के लिए वहां पहले से ही गढ़वाल रॉयल प्लाटून के 672 सैनिक अंग्रेज कैप्टन रिकीट के नेतृत्व में तैनात थे। कैप्टन रिकीट को क्रांतिकारियों के हालात बेकाबू होते दिखाई देने लगे तो उन्होंने सेना को आर्डर दिया की गोली चलाओ। उनकी आवाज को चीरती हुई दूसरी आवाज आई ''गोली मत चलाओ। ''यह दूसरी आवाज हवलदार मेजर चंद्र सिंह गढ़वाली की थी। एक भी गोली नहीं चली। कप्तान नाराज हो गया। हुक्म न मानने के एवज मे सारी प्लाटून के हथियार छीन कर चंद्र सिंह सहित सभी को जेल में डाल दिया गया।

रामानंद सिंह थानेदार (आधुनिक महाराणा सांगा)

यह संपन्न किसान परिवार का बी.ए. पास बेटा पुलिस में थानेदार के पद पर कार्यरत था। क्रांतिकारियों द्वारा जब आजादी आंदोलन की लहर चलाई गई तो इस देश भक्त वीर ने दरोगा पद से त्यागपत्र देकर क्रांतिकारियों में सम्मिलित होकर अंग्रेजों से जबरदस्त लड़ाई लड़ी। कई अंग्रेजी थाने फूंके। कुछ पर कब्जा भी कर लिया। इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। बड़ी यातनाएं सही। क्रांति में इनकी एक आंख चली गई, एक टांग टूट गई और शरीर पर 80 नहीं 180 घाव थे।

ठाकुर विष्णुदेव नारायण सिंह

विष्णुदेव नारायण सिंह गांव मलखाचक (बिहार) के बड़े जमींदार थे। 1942 अगस्त मास में जब तोड़फोड़ क्रांति हुई तो इन्होनें विद्रोहियों की भीड़ का नेतृत्व करके नया नगर रेलवे स्टेशन पर तोड़फोड़ के साथ रेल पटरियां भी उखाड़वा दी। फिर इस भीड़ ने सिंघिया थाने पर कब्जा कर लिया। 1942 के 18 अगस्त से 10 सितम्बर तक थाने सहित क्षेत्र पर जनता का कब्जा बना रहा। फिर अंग्रेजी प्रशासन की कार्यवाही शुरू हुई। विष्णुदेव नारायण सिंह भूमिगत हो गये उन पर मार्शल ला के तहत जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के वारन्ट जारी हुए। इनकी सम्पत्ति की कुड़की और परिवार के सभी बालिग सदस्यों के गिरफ्तारी वारन्ट जारी कर दिये गये। वे सभी कभी पकड़ में नहीं आये।

ठाकुर मलखान सिंह मढाड

ये हरियाणा जिला करनाल के घरौंडा गांव अब उपनगर के ठाकुर रिसाल सिंह के सुपुत्र थे। इनका जन्म 1893 ईस्वी में हुआ। इनको क्रांति का ऐसा जुनून चढ़ा कि फौज की नौकरी छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े। सरकार द्वारा इनको ऊंचे पदों पर कई बार लगाया गया, किंतु ये राष्ट्र भक्ति नहीं छोड़ सके। इन्होंने एक बार खुद पुलिस की पिटाई भी की जब यह किसी प्रकार नहीं माने तो आखिरकार इन्हें मुल्तान की जेल में भेज दिया गया और वहीं पर पेड़ पर उल्टा लटका कर 3 दिन तक पिटाई भी की। आखिरकार इतना लंबे समय तक लगातार उत्पीड़न से राष्ट्र के लिए बलिदान हो गए। घरौंडा में इनका भरापूरा परिवार है।

ठाकुर राम बिनोद सिंह

राम बिनोद सिंह बिहार सारण जिले के अंतर्गत मलखाचक गांव के बड़े ही साहसी क्षत्रिय थे। इनके पिता जय कृष्ण सिंह पुलिस में हवलदार थे। 1918 ई. में यह सारे बिहार की क्रांति के इंचार्ज बन गए। इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। 1928 ईस्वी में इन्होंने भगत सिंह की हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का गठन कर दिया था। दूसरे स्थानों के क्रांतिकारियों को पुलिस की पकड़ से बचाने के लिए यह शरण दिलाते रहे। इनकी दोनों पुत्रियां सरस्वती और शारदा भी क्रांति में जुटी रही। 20 अगस्त 1942 को अंग्रेजों ने इनके घर को डायनामाइट से उड़ा कर नाश कर दिया।

श्रीनारायण सिंह

ये मलखाचक (सारन–बिहार) के वीर क्षत्रिय थे। ये बीएससी अंतिम वर्ष में पढ़ रहे थे। अपने गांव के अनेक क्षत्रियों की भांति क्रांति आंदोलन में कूद पड़े। अपनी क्रांतिकारियों की टोली लेकर अंग्रेजों से भिड़ जाते रहे। इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध अपने क्षेत्र में समानांतर सरकार बनाने का कार्य किया। अंग्रेजों ने इनके घर को फूंक डाला। इनकी टोली के कुछ क्रांतिकारी अंग्रेजों ने पकड़ लिए तो इन्होंने आमने–सामने उनसे युद्ध छेड़ दिया जिसमें इनको कई गोलियां लगी और ये बलिदान हो गए।

ठाकुर जयदेव सिंह मढाड

ठाकुर जयदेव सिंह हरियाणा जिला करनाल तहसील असन्ध के गांव सालवन के निवासी थे और ये आजादी के आंदोलन में जूझते हुए अंग्रेजों की गिरफ्त में आ गए थे। मुल्तान की जेल में नीम के पेड़ पर उल्टा लटका कर इनकी पिटाई की गई। उल्टा लटके हुए ही इनके प्राण चले गए। सरकारी विद्यालय असंध में इनका बलिदानी स्तंभ खड़ा है। इनके पुत्र ठाकुर रणधीर सिंह एड्वोकेट हरियाणा में एम.एल.ए. भी बने जिनके पुत्र ठाकुर वीरेंद्र सिंह जी करनाल में वरिष्ठ एड्वोकेट के तौर पर निवासरत है।

ठाकुर सुमेर सिंह चौहान

उत्तर प्रदेश सहारनपुर जिले के पनियाला गांव के बड़े जमींदार थे। देश आजादी के लिए इन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध जबरदस्त अभियान चलाये। लोग इनको महात्मा समे सिंह के नाम से जानते रहे हैं। अपने जीवन के अंतिम दिनों में तो अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए इन्होंने हस्तिनापुर में रोजाना एक टीन देसी घी से लम्बे दिनों तक वैदिक हवन रचाये। इनके प्रतिभाशाली पुत्र ठाकुर यशपाल सिंह जी सहारनपुर क्षेत्र से सांसद बनते रहे थे। महात्मा जी की मूर्ति हस्तिनापुर मे लगी है।

चंद्रमा सिंह

इनका जन्म तत्कालीन शाहाबाद वर्तमान भोजपुर (बिहार) जिले के गांव इजरी पिपरा में 1910 ई. में हुआ था। इनके पिता अंग्रेजी पुलिस इंस्पेक्टर थे। देश आजादी क्रांति के जुनून को देखाते हुए उन्होंने अपनी इतनी ऊंची नौकरी से त्यागपत्र देकर क्रांतिकारियों के साथ जुट गए। जब पिता ही आजादी के दीवाने थे तो पुत्र कैसे पीछे रहते। ये भी क्रांति का धमाल मचाने लगे। इन्होंने कई बार पुलिस थानों पर चढ़ाई की। भगत सिंह के विरुद्ध गवाही देकर उनकी फांसी का कारण बने थे बेतिया नगर के फणींद्र नाथ घोष। चंद्रमा सिंह ने एक साथी के साथ बेतिया शहर में जाकर जहर से बुझी खुकरी से फणींद्र घोष के सिर पर कई वार किए जिससे अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गई।

SPONSORED BY :

SAGAR INDUSTRIES

Mfg. of : All Types of Food Grain Dryer, Ricemill Paraboiling & Steam Plant, Steam Radiators of Copper, S.S, M.S & All Types of Machinery & Tools.

Behind Hafed, Ganger Padhana Road, Taraori (Karnal)- 132116

sagarindustries517@gmail.com

www.sagarindustries.in

81999-91013
81999-91012

ISHWAR RANA
Director

e[; inkf/kdkjhx.k

l j{kd
कर्नल देवेन्द्र सिंह 'वीरचक्र'
94160&28189

v/;{k
डा. नरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान, पधाना
94164&05335

ofj"B mik/;{k
कुलदीप सिंह चौहान, उचाना
98963&90690

egklfpo
एडवो. बृजपाल सिंह मढाड, ऊँचा समाना
99919&85000

dks"kk/;{k
अजमेर सिंह पंवार, औंगद
98121&43088

fp=koyh d l dyd] l t d vkj y[kudrk

cyohj flg pkgku ?kjkMk
93546&02556

,o
lnL;x.k
bfrgkl l dyu ,o l j{k.k lefr] djuky

Designed & Printed By:
Sandeep Rana 74539-64000
Sachin Khanchi 92680-12000
DIGITAL GRAPHICS & PRINTING
All Types of Flex Printing & Advertisement
Meerut Road, Near K.R. Cinema, Karnal (HR.)
Printed on : 18.10.2023

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम

श्री रामचंद्र वेद के ज्ञान और सात वैदिक मर्यादाओं को जीवन में अपनाने से मर्यादा पुरूषोत्तम कहे गए । अपने महान गुणों, कर्म और स्वभाव से आज भी जन-जन में पूजित हैं।

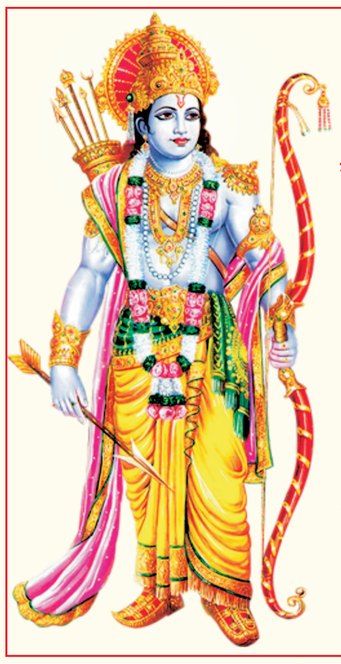

रघुकुल रीत सदा चली आई।
प्राण जाएं पर वचन न जाई ॥

श्री राम का जन्म त्रेतायुग के अन्त में हुआ था। भारत ही नहीं सारे संसार में इनका प्रताप सूर्य की भांति जाज्वल्यमान होकर चमक रहा है। शिव धनुष को भंग करके सीता से आपका स्वयंबर हुआ। आपके दो पराक्रमी पुत्र बड़े कुश और छोटे लव थे।

जय क्षात्र धर्म ओ३म् वीर भोग्या वसुंधरा

महाराणा प्रताप स्मृति भवन समिति, सैक्टर- 8, करनाल (राजपूत महासभा करनाल, हरियाणा)

अति प्राचीन क्षत्रिय सम्राटों, राजाओं, महाराजाओं की चित्रावली।

14वीं सदी से उत्तर भारत में क्षत्रियों को आमतौर पर राजपूत भी कहा जाने लगा। इसलिए क्षत्रिय और राजपूत शब्द एक दूसरे के पूरक हैं। क्षत्रियों की यह चित्रावली समस्त सनातनी लोगों के लिए गर्व का विषय है, क्योंकि क्षत्रिय समाज सनातन धर्म का एक अंग है। अन्य तीनों अंग ब्राह्मण, वैश्य और शूद्र लोगों के लिए भी हमारे ये शासकगण आदर्श रूप हैं इसलिए हम सबकी श्रद्धा के पात्र हैं।

योगेश्वर श्रीकृष्ण

चंद्रवंशी क्षत्रिय श्रीकृष्ण का जन्म राजा यदु के वंश में हुआ। ये वैदिक वांग्मय के पूर्ण ज्ञाता थे। बहुत बड़े योगेश्वर थे। गीता के उपदेशक थे। कूटनीति निपुण होने के कारण कौरवों की 11 अक्षोहिणी सेना को पांड्वों की 7 अक्षोहिणी सेना से युद्ध में धराशायी करवाकर युधिष्ठिर का राज्य स्थापित करवा दिया और स्वयं गुजरात क्षेत्र में जाकर समुद्र के बीच चारों ओर से सुरक्षित टापू पर द्वारकाधीश नगरी बसा कर वहां के राजा बन बैठे। श्री कृष्ण द्वापर युग के बिल्कुल अंत में हुए थे। वे मूलत: चंद्रवंशी क्षत्रियों की शाखा के यदुवंशी हैं। वर्तमान में जादौन, रावल, भाटी, तावणी, जड़ेजा इत्यादि राजपूत वंश श्रीकृष्ण के सीधे वंशज है।

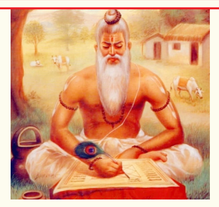

ऋषि एवं प्रथम राजा स्वायंभुव मनु

ऋषि एवं प्रथम राजा स्वायंभुव मनु ब्रह्मा जी की आगामी पीढ़ियों में इनका जन्म हुआ। वेदों के ज्ञान के आधार पर आर्यों के संविधान रूप इन्होनें बहुत सुंदर मनुस्मृति ग्रंथ की रचना श्रुति रूप में की। मध्यकाल में शरारती तत्वों ने इस ग्रंथ में शूद्रों के विरूद्ध अपनी मनमानी आधारहीन बातों के श्लोकों का भी मिश्रण कर दिया। जबकि शाश्वत रूप में यह शानदार ग्रन्थ है।

राजा मरीचि

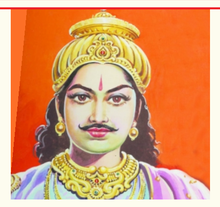

धरती पर पूर्ण रूप से प्रथम राजा मरीचि। ये स्वायंभुव मनु के पुत्र थे। ऐसा माना जाता है कि इनका राज्य तिब्बत में था। प्राचीन ग्रंथागार के जानकार महर्षि दयानंद ने अपने पूना प्रवचनों में इन्हें पृथ्वी पर सर्वप्रथम राजा वर्णित किया है। आर्यों की राजप्रथा और जनता की जीवनशैली आरंभ से ही चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के आधार पर थी।

राजा विवस्वान

राजा विवस्वान अपरनाम सूर्य। इनके सूर्य नाम से ही आगामी वंशज सूर्यवंशी क्षत्रिय कहे जाने लगे। राज्य तिब्बत। समय के बढ़ने के साथ-साथ इनका सूर्यवंश अनेक शाखाओं, उपशाखाओं, प्रशाखाओं और उनकी भी शाखाओं मे बंटता हुआ बढ़ता गया। वैदिक राज परम्परा का प्रचलन निरंतर चलता रहा।

सूर्यवंशी महाराजा वैवस्वत मनु

सूर्यवंशी महाराजा वैवस्वत मनु तिब्बत में महाभयंकर बाढ़ आने पर इन्होनें नीचे मैदानी भाग में आकर अयोध्या नगरी का निर्माण किया। तब से लेकर अयोध्या नगरी आजतक निरंतर बसी हुई है। अयोध्या नगरी का नया राम मंदिर 2024 ई0 में निर्मित होकर विश्व विख्यात हो रहा है।

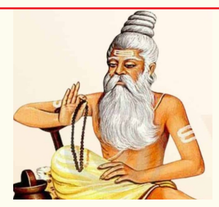

चंद्रवंश के जनक ऋषि अत्रि

चंद्रवंश के जनक ऋषि अत्रि। उनकी अत्यंत धर्मपरायण धर्मपत्नी हमारी माता अनुसूया के गर्भ से पुत्र सोम का जन्म हुआ। सनातन संस्कृति के अत्यंत श्रद्धेय सप्त ऋषियों मे अत्रि जी का नाम भी प्रचलित है। विष्णुपुराण आदि कई पुराणों मे सप्त ऋषियों की सूची दी गई है।

राजा सोम अपरनाम चन्द्र

चंद्र वंश के आदि पूर्वज राजा सोम अपरनाम चन्द्र। इनके चंद्र नाम से इनके वंशज चंद्रवंशी क्षत्रिय कहे गए। इनके पुत्र का नाम बुध था जिसका विवाह वैवस्तमनु की पुत्री इला से हुआ था। समय के बढ़ने के साथ-साथ इनका चंद्रवंश अनेक शाखाओं, प्रशाखाओं और उनकी भी शाखाओं मे बंटता हुआ बढ़ता गया।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा बुध

इन्होंने प्रतिष्ठानपुर (प्रयाग) को अपनी राजधानी बनाया। यहीं से चंद्रवंशी क्षत्रियो का राज्य आरंभ हुआ। बुध के बाद आगे चलकर चंद्रवंश के आगामी राजागण भी अपनी नई-नई राजधानियां स्थापित करके बढ़ते रहे, फैलते रहे। राज कार्य और प्रजा की जीवनशैली चारों वेदों के आधार पर थी जो कि बड़ी विकसित थी।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा नहूष

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा नहूष। राजा पुरवरा के पश्चात प्रतिष्ठानपुर की राजगद्दी पर विराजमान हुए। ये अत्यंत धर्मप्रिय और प्रजाप्रिय राजा थे। देश में सनातन वैदिक धर्म परम्परा का आरम्भ से ही निरंतर प्रचलन चलता आ रहा था।

सूर्यवंशी महाराजा इक्ष्वाकु

सूर्यवंशी महाराजा इक्ष्वाकु। राज्य कौशल, राजधानी अयोध्या, इनके समय में स्याही का अविष्कार होकर वेदों आदि श्रुति ग्रंथों को भोजपत्रों इत्यादि पर लिखाना आरंभ हुआ। सूर्यवंश के तीन प्रवरों में इनका नाम है। इनके नाम से सूर्यवंश को इक्ष्वाकु वंश भी कहा जाने लगा। प्रवर का अर्थ अति विशिष्ट शोभा वाला अर्थात् प्रकृष्ठ व्यक्ति।

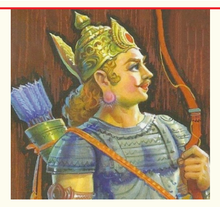

सूर्यवंशी सम्राट मान्धाता

ये इतने पराक्रमी सम्राट थे कि इसका राज्य सातों द्वीपों पर माना गया है। इनके पिता का नाम राजा युवनाश्व और माता का नाम गौरी था। मान्धाता ने राजसूय यज्ञ और अश्वमेघ यज्ञ दोनों को मिलाकर लगभग 100 यज्ञ किये थे। ये बड़े धर्मात्मा, न्यायकारी और दानवीर सम्राट थे। वैदिक राज्य होने से यज्ञों के प्रति बड़ी श्रद्धा थी। वेदों का बहुत आदर सम्मान था।

सूर्यवंशी सम्राट काकुत्स्थ

ये भी अयोध्या के अत्यंत पराक्रमी सम्राट थे। इनका नाम भी सूर्यवंश के तीन प्रवरों में गिना गया है। ये वेद ज्ञान में पारंगत थे और धुरन्धर योद्धा तथा अत्यंत प्रजाप्रिय सम्राट थे। आरंभ से ही आर्यावर्त मे सनातन वैदिक संस्कृति के निर्देशानुसार लोगों की जीवनशैली बड़ी खुश-हाल थी।

सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र

इनका नाम सत्य के लिए भारत के जन-जन में विख्यात है। राजधानी अयोध्या से राजकाज को संभाले रखा। इनकी रानी का नाम तारामती था तथा रोहितास नामक इनके एक पुत्र थे। राजा हरिश्चन्द्र के नाम के प्रति आज भी जनता के मनों मे बड़ा आदर और सम्मान है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय ऋषि विश्वामित्र

चंद्रवंशी क्षत्रिय विश्वामित्र कन्नौज के राजा थे। राजकाज छोड़कर सन्यास धारण किया। ईश्वर की भक्ति में तल्लीन रहकर ऋषि पद पाया और वेद में दिए हुए गायत्री मंत्र पर अनुसंधान करके उस महामंत्र को गुरूमंत्र का दर्जा प्रदान कराया। राम और लक्ष्मण को वनों मे ले जाकर अनेक अस्त्र-शस्त्रों की विद्या देकर ऋषियों को तंग करने वाले, उनके यज्ञों को भंग करने वाले राक्षसों का संहार करवाया।

चंद्रवंशी क्षत्रिय सम्राट ययाति

चंद्रवंश मे ये प्रथम चक्रवर्ती सम्राट हुए। इनके पांच पुत्र थे। यदु, द्रह्यु, तुवर्सु, अनु तथा पुरू। पांचों अलग-अलग राज्यो के शासक थे। आगे चलकर इनके वंशजों में कई शाखायें, प्रशाखायें प्रचलित हुई। जिनमें एक अत्यंत प्रसिद्ध कल्चुरि वंश भी है। इनके राज्य काल में भी देश के नागरिकों की जीवनशैली वेदों के आधार पर थी। और प्रजा बड़ी सुखी थी।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा यदु

इनको प्रतिष्ठान पुर से अलग राज्य मिला जो केन, बेतवा और चंबल नदियों के बीच में था। यदुवंशी यादव जाधव वंशीय नामों से इनका वंश बड़े पैमाने पर फला-फूला। आगे चलकर यदु वंश मे भी बहुत सी शाखायें निकली जिनमें भाटी, तावणी आदि प्रसिद्ध है, जनजाति अहीरों ने आरक्षण से खुशहाली पाकर 20वीं सदी में अपने को अनुचित तरीके से यदुवंश से जोड़कर श्रीकृष्ण जी को अपना वंश पूर्वज घोषित कर दिया है जोकि सही नही है जिसका विस्तृत खुलासा ब्रह्मावर्त-आर्यावर्त-भारतवर्ष की देव-दिव्य और कीर्तिशाली आत्मायें ग्रंथ के प्राचीन राजा अध्याय मे देखा जा सकता है।

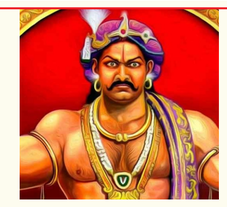

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा पुरू

ये प्रतिष्ठानपुर की राजगद्दी पर विराजमान हुए। इनके वंशज पौरव कहलाये। जिनमें आगे राजा कुरू हुए। कुरू के वंशज कौरव कहे गये, जो महाभारत में लड़े थे। कौरव वंशी राजा पण्डु के पुत्र पाण्डव कहे गये। राजा और प्रजा का जीवन व्यवहार निरंतर सनातन संस्कृति के आधार पर ही चलता रहा था। देश में यज्ञों-हवनों की धूम थी।

सूर्यवंशी राजा भगीरथ

भगीरथ अयोध्या के राजा थे। गंगा की भिन्न-भिन्न धाराओं को संयुक्त करके एक नदी का रूप दिया। इनके नाम पर गंगा का प्रथम नाम भागीरथी था। बाद में पद्मा रखा गया। अंत में देवव्रत यानि महाभारतीय योद्धा भीष्म की माता गंगा के नाम पर गंगा मां नाम रखा गया।

मां गंगा को लाने के कारण देश में राजा भगीरथ के नाम के प्रति आज भी बड़ी श्रद्धा है।

सूर्यवंशी क्षत्रिय सम्राट रघु

रघु अयोध्या के सम्राट थे। ये भी सूर्यवंशी पराक्रमी सम्राट थे। इनके नाम पर आगे सूर्यवंश को रघुवंश भी कहा जाने लगा। इनको भी सूर्यवंश के तीन प्रवर में गिना गया है। ये वेद ज्ञानी, अत्यंत तेजस्वी, परमप्रतापी, न्यायप्रिय तथा परमवीर सम्राट थे।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा पृथु

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा पृथु भी सूर्यवंशियों में बड़े ही पराक्रमी सम्राट हुए। इनके पिता का नाम राजा वेन था। अत्यंत शालीन वृति के होने से इन्हें अलंकार रूप मे विष्णु का अवतार कहा गया है। गो-ब्राह्मण की सेवा करना अपना धर्म समझते थे और भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान करवाते रहते थे।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा सगर

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा सगर अयोध्या के राजा थे। बड़े ही न्यायकारी थे। इनके पुत्र ने किसी लड़के को पानी में डुबा दिया था तो इन्होनें अपने उस पुत्र को आजीवन कारावास में बंद कर दिया था। ये धार्मिक उत्सवों को मनाने में जनता का बड़ा सहयोग करते रहे। सनातन आर्य संस्कृति के प्रसार में इनकी बड़ी रूचि थी।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा भरत

चंद्र वंश की पौरव शाखा के राजा दुष्यंत और रानी शकुंतला के पुत्र भरत परम प्रतापी सम्राट थे। यह बात प्रचलित है कि उनके नाम से आर्यावर्त को भारतवर्ष भी कहना प्रारंभ हुआ। आरंभिक काल से देश मे वेदों के आधार पर सनातन परंपरा चलती आ रही थी जो इनके राज्यकाल में भी फूलती-फलती रही।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा कुरू

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा कुरू ने जांगल देश पर राज्य किया जहां इनके नाम पर कुरुक्षेत्र नगर भी बसा, जो बाद मे महाभारत युद्ध का क्षेत्र बना। राजा कुरू वैदिक परंपरा के परम प्रतापी सम्राट थे। कौरव व पांड्व कहे जाने वाले वीर इन्हीं की वंश परंपरा में हुए थे।

प्राचीन समय में सतयुग से लेकर द्वापरयुग के महाभारत काल तक राज परम्परा पूर्णत: चारों वेदों के ज्ञान के निर्देशनुसार चलती रही।

चंद्रवंशी क्षत्रिय सम्राट कार्तवीर्यार्जुन

इन्होंने अपने राज्य क्षेत्र का बहुत लंबा विस्तार किया। इनके अधीन 21 राजा थे। इनकी राजधानी माहिष्मति नगरी थी जो वर्तमान में मध्यप्रदेश का महेश्वर नगर है। राज्य मे हवन-यज्ञों का अनुष्ठान निरंतर चलता रहता था। राजा वेदों का अत्यंत सम्मान करने वाले थे तभी समस्त प्रजा बड़ी सुखी रहती थी।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा गंधार

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा गंधार। राजा ययाति के दूसरे पुत्र द्रह्यु के वंश में राजा गंधार हुए जिन्होंने अपने नाम पर गांधार देश की स्थापना की जो आजकल अफगानिस्तान कहलाता है। धृतराष्ट्र की रानी गांधारी यहां की राजकुमारी थी। राज्य में वैदिक परम्परा प्रचलित थी सभी लोग सनातन संस्कृति अनुसार जीवन अपनाकर खुशहाल थे।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा अम्बरीश

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा अम्बरीश का नाम भी अयोध्या के पराक्रमी सम्राटों में गिना जाता है। ये राजा नाभाग के बड़े पुत्र थे। बड़े ही धर्म परायण और चक्रवर्ती राजा थे। इन्होनें अनेक राजाओं को जीतकर अपना करदायी (टैक्स पेयी) बनाया। अंत में राजपाट छोड़कर प्रभु भक्ति में लीन हुए और राजर्षि कहलाये।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा दिलीप

अयोध्या के महान शासक थे। शेर को मार कर गाय को बचाया था। ये बड़े ही निर्भीक और निर्लोभी राजा थे। न्यायकारी और दानवीर थे। धन के संग्रह में इनकी विशेष रूचि नहीं थी। ये उच्च कोटि के वैदिक विद्वान थे और बहुत ही शांत प्रवृति वाले थे।

विदेह राज सीरध्वज जनक

सूर्यवंशी राजा निमि के वंशज राजा मिथि ने मिथिला बसाई। उनके वंश में राजा जनक (विदेह राज सीरध्वज जनक) मिथिला नरेश हुए जो हमारी माता सीता के पिता थे। ये अपने दरबार में वैदिक विद्वानों यानि ऋषियों और आचार्यों को बुलावाकर भिन्न-भिन्न विषयों पर वैदिक व्याखाओं के माध्यम से धर्म के सत्य निर्देशों की स्थापना करवाते रहते थे। जिससे वैदिक सनातन धर्म परंपरा शुद्ध और सुदृढ़ बनी रहती थी।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा कुश

श्री राम के बड़े पुत्र थे। इन्होनें श्री राम का अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा रोकने की हिम्मत की थी। श्री राम के बाद अयोध्या के राजा बने। कथा सरित्सागर के लेखक ने अज्ञानवश कुश को राम का छोटा पुत्र बना दिया जबकि ये बड़े थे और बड़े ही जबरदस्त धनुर्धर थे। लव इनसे छोटे थे। वे भी बड़े पराक्रमी योद्धा थे।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा हस्ति

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा हस्ति। इन्होंने हस्तिनापुर नगर को राजधानी बना कर राज्य किया। हस्तिनापुर कुरूवंशियों का लंबे समय तक राज्य रहा। महाभारत के युद्ध के बाद धृतराष्ट्र की सेनाओं को हराकर उनके भाई पण्डु के बड़े पुत्र युधिष्ठिर राजा बने। युधिष्ठिर के भाई अर्जुन की अगली छ: पीढ़ियों ने हस्तिनापुर पर राज्य किया। यह नगर वर्तमान मे उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले के अंतर्गत है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय दादा भीष्म

ये शांतनु के पुत्र थे। इनका नाम देवव्रत था। अपने पिता के वैवाहिक सुख के लिए खुद का विवाह न करने तथा राजगद्दी पर न बैठने की भी आपने दृढ़ प्रतिज्ञा यानि भीष्म प्रतिज्ञा की। इसलिये नाम से भीष्म पुकारे जाने लगे। महाभारत के युद्ध में अपना पराक्रम प्रस्तुत किया फिर सैकड़ों तीरों से बिंध जाने पर भी अपने योगबल से 8 दिन बाद सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने पर ही अपने प्राण त्यागे।

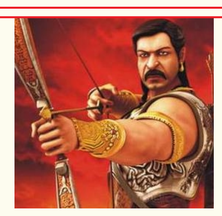

चंद्रवंशी क्षत्रिय सम्राट युधिष्टिर

महाभारत का युद्ध जीतकर आर्यावर्त के सम्राट बने। राजधानी हस्तिनापुर से राज्य का संचालन किया। महाभारत युद्ध से पहले इन्होनें इंद्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया था। जिसे वर्तमान में पुरानी दिल्ली कहते हैं। युधिष्ठिर मूल रूप से राजा कुरू के वंशज होने से कौरव कहलाते थे। धृतराष्ट्र और पण्डु दोनों भाई कौरव वंशी थे, किंतु पण्डु के पुत्र पराक्रमी निकले और पांड्व कहलाये। इस प्रकार पांड्व, कौरव वंश का शाखा वंश बन गया।

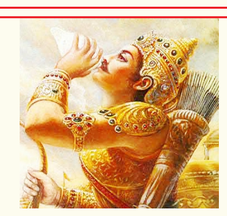

चंद्रवंशी क्षत्रिय अर्जुन

चंद्रवंशी क्षत्रिय अर्जुन। महाभारत युद्ध में अति विशिष्ट धनुषधारी योद्धा सिद्ध हुए। अपने भाई युधिष्ठिर की दांई भुजा के समान सहायक थे। अर्जुन का विवाह श्री कृष्ण की बहन सुभद्रा से हुआ था जिसके गर्भ से पराक्रमी पुत्र अभिमन्यु का जन्म हुआ था। माना जाता है कि अर्जुन के गाण्डीव धनुष के बल पर ही महाभारत का युद्ध जीता गया।

नागवंशी क्षत्रिय राजा शेषनाग

नागवंशी क्षत्रिय राजा शेषनाग। इनका राज्य कश्मीर पर था। इनसे आगे नाग वंश के राजा वासुकी हुए। इन दोनों के नाम का वर्णन रामायण ग्रंथ में है। श्री कृष्ण के दादा शूरसेन ने अपनी पुत्री पृथा (कुन्ती) को अपनी बुआ के पुत्र कुन्ती भोज नागवंशी को गोद दिया था। क्षत्रिय वंशावलियों मे नागवंश का वर्णन है। नागवंशी क्षत्रियों का दिल्ली पर भी राज्य था। क्षत्रिय नरेश राजा अनंगपाल तोमर ने इन्हें हराकर दिल्ली को अपने अधीन कर लिया था। इसके अतिरिक्त नागवंशी क्षत्रियों का मथुरा और कुरूक्षेत्र पर भी राज्य था।

सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा बृहद्बल

महाभारत के युद्ध में कौरवों के पक्ष में पाण्ड्वों से लड़े। अर्जुन के पुत्र वीर अभिमन्यु ने इन्हे बुरी तरह घायल कर दिया जिससे इनके प्राण चल गये। देखें महाभारत द्रोण पर्व अध्याय-1 श्लोक 18-22 गीता प्रेस गोरखपुर।

कौरव पक्ष का साथ देने पर भी इन्हें यहां इसलिए दिखाया गया है कि उस काल में भी सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा लोग विद्यमान थे।

महावीर स्वामी जैन तीर्थंकर

महावीर स्वामी जैन तीर्थंकर जन्म 599 ईस्वी पूर्व, निर्वाण 527 ईस्वी पूर्व। जैन मत के ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर से लेकर ज्ञात वंशी शाखा के महावीर स्वामी 24 वें तीर्थंकर तक सभी तीर्थंकर क्षत्रिय कुलों में जन्में थे।

इन तीर्थंकर क्षत्रियों ने बाहरी शत्रुओं को मारने की बजाय काम-क्रोध आदि मन के विकारी शत्रुओं का मारना ज्यादा उचित समझा।

सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध)

जन्म 563 ई0 पूर्व, निर्वाण 483 ई0 पूर्व। सूर्यवंशी क्षत्रियों की शाक्य वंशी शाखा में कपिलवस्तु के राजा शुद्धोधन के पुत्र। बौद्ध मत के संस्थापक। राजा का पुत्र होते हुए भी 27 वर्ष की भरपूर जवानी मे अपनी युवा धर्मपत्नी यशोधरा और एक मात्र पुत्र राहुल को छोड़कर शांति की खोज के लिये वन में चले जाना किसी बहुत बड़े धैर्यवान महापुरूष के वश की ही बात है, आम नागरिक तो ऐसा सोच भी नही सकता, करना तो बहुत दूर की बात है।

चंद्रवंशी क्षत्रिय अभिमन्यु

चंद्रवंशी क्षत्रिय अभिमन्यु। 16 वर्षीय धुरंधर धनुर्धारी। महाभारत के युद्ध में चक्रव्यूह में घुसकर कौरव सेना के सात मुख्य योद्धाओं के पसीने छुटा देने वाला यशस्वी बलिदानी योद्धा। यह बात प्रचलित है कि चक्रव्यूह में घुस जाने की कला अभिमन्यु ने अर्जुन द्वारा सुनाई गई तकनीक को माता सुभद्रा के गर्भ में ही सीख लिया था।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा परीक्षित

पांचों पांड्वों के स्वर्गवास करने के बाद अपने तयेरे दादा सम्राट युधिष्ठिर के सिंहासन पर अर्जुन के पौत्र और अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित हस्तिनापुर की राजगद्दी पर विराजमान हुए। जन्म से पूर्व परीक्षित जब अपनी माता उतरा के गर्भ मे थे तो द्रौणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने पांड्व वंश को समाप्त करने के लिए उतरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया था, किंतु 16 कला निपुण भगवान श्री कृष्ण जी ने ब्रह्मास्त्र के प्रभाव को किसी प्रकार से निरस्त करके गर्भ में परीक्षित को बचा लिया था।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा जनमेजय

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा जनमेजय। परीक्षित के पुत्र, अभिमन्यु के पौत्र तथा अर्जुन के प्रपौत्र। राजधानी हस्तिनापुर से राज्य संचालित रखा। नागवंशी क्षत्रियों ने इनके राज्य में बड़ा विद्रोह खाड़ा कर रखा था। तब राजा जनमेजय ने एक बड़े भारी विजय यज्ञ की रचना करके नागवंशियों के दमन करने का संकल्प लेकर उन पर हमला कर दिया। जिसमें बहुत से नागवंशी शूरवीरों के प्राण चले जाने से उनके वंश का बल घट गया।

चंद्रवंशी क्षत्रिय राजा निचक्षु

ये हस्तिनापुर के अंतिम शासक थे। राजधानी हस्तिनापुर को गंगा की बाढ़ ने नष्ट कर दिया तब पाण्ड्व वंशी राजा निचक्षु ने हस्तिनापुर से राजधानी हटाकर वत्स देश की कौशाम्बी नगरी को नई राजधानी बनाया। यह राजा अर्जुन की सातवीं पीढ़ी में थे।

इनके बाद कुछ धर्माधिकारियों ने अज्ञानता से कुछ वेद मंत्रों के अर्थ गलत करके वेदों की गरिमा को कम करना शुरू कर दिया।

SPONSORED BY :

SAGAR INDUSTRIES

Mfg. of : All Types of Food Grain Dryer, Ricemill Paraboiling & Steam Plant, Steam Radiators of Copper, S.S, M.S & All Types of Machinery & Tools.

Behind Hafed, Ganger Padhana Road, Taraori (Karnal)- 132116
sagarindustries517@gmail.com
www.sagarindustries.in
81999-91013
81999-91012

ISHWAR RANA
Director

मुख्य पदाधिकारीगण

संरक्षक
कर्नल देवेन्द्र सिंह 'वीरचक्र'
94160-28189

अध्यक्ष
डा. नरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान, पधाना
94164-05335

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
कुलदीप सिंह चौहान, उचाना
98963-90690

महासचिव
एडवो. बृजपाल सिंह मढाड, ऊँचा समाना
99919-85000

कोषाध्यक्ष
अजमेर सिंह पंवार, औंगद
98121-43088

चित्रावली के संकलक, सृजक और लेखानकर्ता

बलबीर सिंह चौहान घरौंडा
93546-02556

एवं

सदस्यगण
इतिहास संकलन एवं संरक्षण समिति, करनाल

Designed & Printed By:
Sandeep Rana 74539-64000
Sachin Khanchi 92680-12000
DIGITAL GRAPHICS & PRINTING
All Types of Flex Printing & Advertisement
Meerut Road, Near K.R. Cinema, Karnal (HR.)
Printed on : 18.10.2023